मज़दूरों के बच्चों के लिए परियों की कहानियाँ

हर्मिनिया ज़ुर मुहलेन

कवर ड्रॉइंग और रंगीन प्लेट्स लिडिया गिब्सन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

मज़दूरों के बच्चों के लिए परियों की कहानियाँ

हर्मिनिया ज़ुर मुहलेन

कवर ड्रॉइंग और रंगीन प्लेट्स लिडिया गिब्सन
हिंदी: अरविन्द गुप्ता

गुलाब की झाड़ी

गौरैया

छोटा भूरा कुत्ता

क्यों?

प्रस्तावना

प्यारे छोटे साथियों:

मज़दूरों के बच्चों के लिए परियों की कहानियों की इस छोटी सी किताब का अनुवाद करके मुझे बहुत खुशी है क्योंकि मुझे पता है कि आप, मेरे प्यारे युवा साथियों, इसका जरूर आनंद लेंगे.

आपने बहुत सी परीकथाएँ पढ़ी होंगी, उनमें से कुछ बहुत सुंदर होंगी और कुछ ऐसी जिसमें भयानक दानव और भूत आपको डराते होंगे. लेकिन मुझे यकीन है कि आपने कभी भी वास्तविक रोज़मर्रा की चीज़ों के बारे में ऐसी प्यारी कहानियाँ नहीं पढ़ी होंगी. आप हर दिन अपने आस-पास गरीब लोगों को पीड़ित देखते हैं; आप में से कुछ ने खुद महसूस किया होगा कि गरीब होना कितना कठिन है. आप जानते हैं कि दुनिया में अमीर लोग हैं, जो काम नहीं करते और उन्हें फिर भी जीवन की सभी अच्छी चीज़ें उपलब्ध होती हैं. आप यह भी जानते हैं कि आपके पिता कड़ी मेहनत करते हैं और फिर उन्हें इस बात की चिंता लगी रहती है कि अगर उनकी नौकरी चली गई तो फिर क्या होगा. कॉमरेड ज़ुर मुहलेन, जिन्होंने ये परीकथाएँ लिखी हैं, हमें बहुत ही सुंदर तरीके से बताती हैं कि इन चीज़ों को कैसे रोका जा सकता है. हम सभी जो काम करते हैं, उन्हें यह सीखना चाहिए कि अगर हम एक-दूसरे की मदद करेंगे तो हम दुनिया को, मज़दूरों और उनके बच्चों के रहने के लिए एक बेहतर जगह बना सकेंगे. वह हमें दिखाती है कि अमीर लोग काम नहीं करते बल्कि हमें गुलाम बनाए रखते हैं, वे हमारे दुश्मन हैं; हमें, दुनिया के मज़दूरों को एक साथ मिलकर इन गलत कामों को रोकना चाहिए. सुंदर, नाज़ुक गुलाब की झाड़ी भी जानती थी कि जब अमीर महिला उसके पास आई तो उसे अपने काँटों का इस्तेमाल कैसे करना है. नन्ही गौरैया अपने भाइयों के लिए बेहतर ज़मीन की तलाश करते हुए मर जाती है, लेकिन वह व्यर्थ में नहीं मरती है. वफ़ादार छोटा भूरा कुत्ता, उस नीग्रो लड़के के लिए अपनी जान दे देता है जिसने उसे डूबने से बचाया था; और मगरमच्छ ने साबित कर दिया कि एक बदसूरत, भूखा जानवर भी एक अमीर गुलाम मालिक से ज़्यादा दयालु हो सकता है.

और हमारे छोटे दोस्त पॉल ने सीखा कि उसे यह पूछना बंद नहीं करना चाहिए कि दुनिया में चीज़ें क्यों गलत हैं, बल्कि उसे सभी मज़दूरों को साथी बनाना चाहिए और उन्हें भी "क्यों" पूछना सिखाना चाहिए, जब तक कि लाखों लोग यह सवाल न पूछें और इसका जवाब न ढूंढें.

जब आप ये कहानियाँ पढ़ लेंगे, तो मुझे यकीन है कि आप अपने सभी दोस्तों को यह किताब उधार देना चाहेंगे, ताकि वे भी किताब के नए दोस्तों के साथ कुछ खुशनुमा पल बिता सकें.

आपकी प्यारी साथी,

इडा डेल्स

गुलाब की झाड़ी

"वह ठीक हो जाएगी"

गुलाब की झाड़ी को नहीं पता था कि वह कहाँ पैदा हुई थी और उसने अपने शुरुआती दिन कहाँ बिताए थे - यह एक सर्वविदित तथ्य है कि फूलों की याददाश्त खराब होती है, लेकिन इसकी भरपाई में वे भविष्य देख सकते हैं. जब वह पहली बार अपने बारे में सचेत हुई, तो वह एक शानदार हरे लॉन के बीच में खड़ी थी. उसके एक तरफ उसे एक बड़ा सफेद पत्थर का घर दिखाई दिया, जो लिंडन के पेड़ों की शाखाओं के बीच से चमक रहा था, दूसरी तरफ एक ऊँचा जालीदार गेट था जिसके माध्यम से वह सड़क देख सकती थी.

एक पतला लंबा आदमी गुलाब की झाड़ी की सावधानीपूर्वक देखभाल कर रहा था. वह खाद लाया, गुलाब की झाड़ी की झुकी हुई टहनियों को छाल से बाँधा, गुलाब की झाड़ी की प्यासी जड़ों के पीने के लिए पानी दिया. गुलाब की झाड़ी उस आदमी के प्रति आभारी थी, और जब उसके ऊपर लगे गुलाब के फूल खिलकर लाल हो गए, तो उसने अपने मित्र से कहा, "तुमने मेरा बहुत ख्याल रखा है, तुम्हारी वजह से ही मैं इतनी सुंदर बनी हूँ. बदले में मेरे कुछ सबसे प्यारे फूल ले लो."

आदमी ने अपना सिर हिलाया. “तुम्हारा शुक्रिया प्रिय गुलाब की झाड़ी. मैं खुशी-खुशी तुम्हारे कुछ खूबसूरत फूल अपनी बीमार पत्नी के लिए ले जाऊँगा. लेकिन मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकता. क्योंकि तुम मेरी नहीं हो."

"मैं तुम्हारी नहीं हूँ!" गुलाब की झाड़ी ने कहा. "क्या मैं उस व्यक्ति की नहीं हूँ जिसने मेरी देखभाल की है और मेरे बारे में खुद को परेशान किया है? फिर मैं किसकी हूँ?"

आदमी ने पेड़ों के बीच चमकते हुए सफेद घर की ओर इशारा किया और जवाब दिया, "तुम वहाँ रहने वाली अमीर महिला की हो."
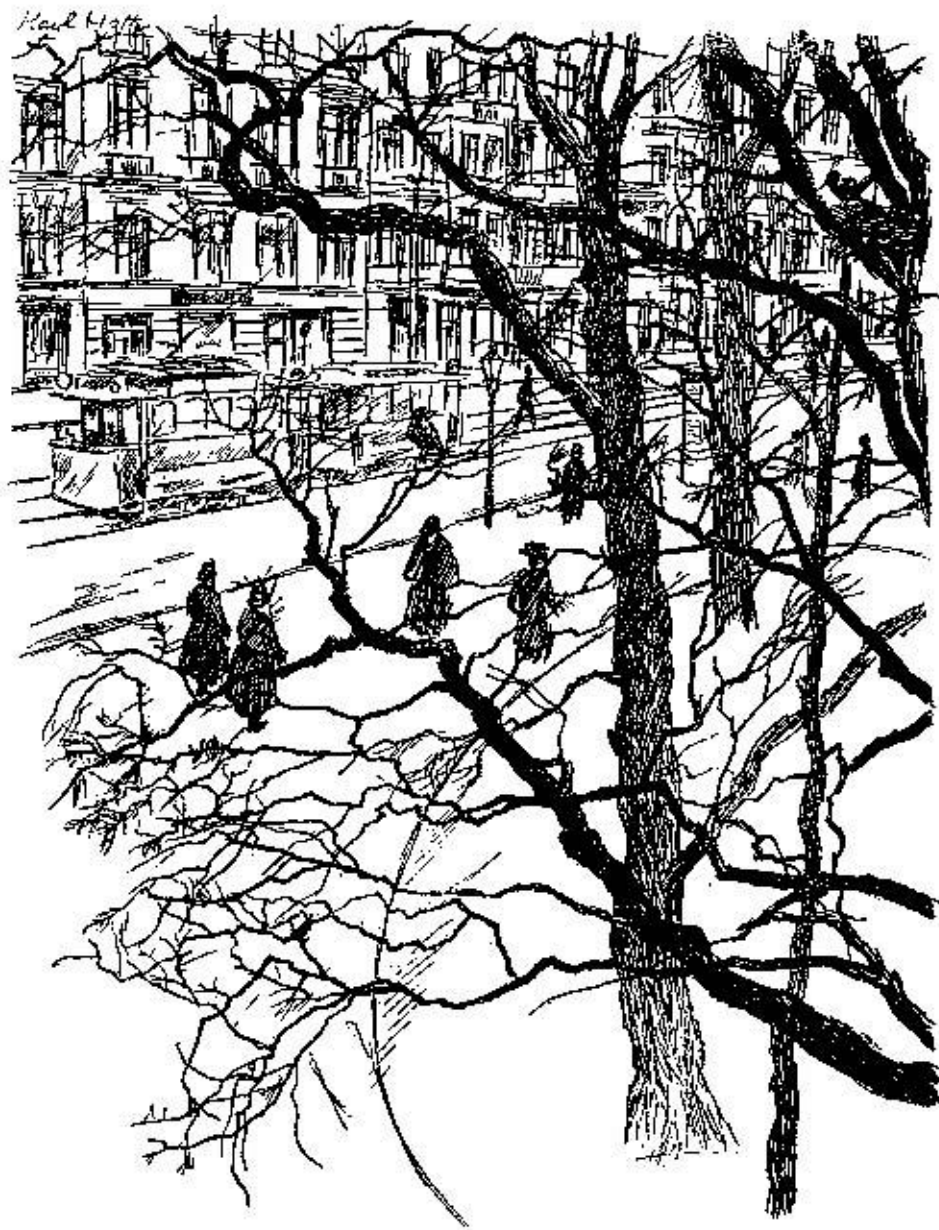
"ऐसा नहीं हो सकता," गुलाब की झाड़ी ने जवाब दिया. "मैंने उस महिला को कभी नहीं देखा. उसने मुझ पर कभी पानी नहीं छिड़का, मेरी जड़ों से मिट्टी नहीं हटाई, मेरी टहनियों को नहीं जोड़ा. फिर मैं उसकी कैसे हो सकती हूँ?"

"उसने तुम्हें खरीदा है."

"यह तो कुछ और ही बात है. फिर बेचारी औरत ने इतने पैसे बचाने के लिए बहुत मेहनत की होगी. अच्छा! ठीक है, मेरे आधे फूल उसके होंगे."

वह आदमी थोड़ा उदास होकर हंसा, और बोला, "देखो प्यारी गुलाब की झाड़ी, तुम अभी दुनिया को नहीं जानती हो, जिसे मैं जानता हूँ. उस औरत ने पैसे कमाने और तुम्हें खरीदने के लिए अपनी एक उंगली भी नहीं उठाई."

"तो फिर उसे पैसे कैसे मिले?"

"वह एक बहुत बड़ी फैक्ट्री की मालकिन है जिसमें अनगिनत कर्मचारी मेहनत करते हैं; वहीं से उसकी दौलत आती है."

गुलाब की झाड़ी क्रोधित हो गई, उसने एक टहनी को ऊपर उठाया, अपने काँटों के पंजों से उस आदमी को धमकाते हुए चिल्लाई, "मैं देख रही हूँ कि तुम मेरे खर्च पर मौज-मस्ती कर रहे हो, क्योंकि मैं अभी भी जवान और अनुभवहीन हूँ, तुम मुझे लोगों की दुनिया के बारे में झूठ बता रहे हो. फिर भी मैं इतनी मूर्ख नहीं हूँ, मैंने चींटियों और मधुमक्खियों को देखा है, और जानती हूँ कि प्रत्येक को वह फल मिलता है जिसके लिए वो काम करता है."

"देखो मधुमक्खियों और चींटियों की दुनिया में ऐसा हो सकता है," आदमी ने गहरी साँस ली, "लेकिन मनुष्यों की बात अलग है. वहाँ आम लोगों को बस इतना ही मिलता है जिससे कि वे भूखे न मरें - बाकी सब मालिक का होता है. मालिक शानदार महल बनाता है, सुंदर बगीचे लगाता है, फूल खरीदता है."

"क्या यह सच है?"

"हाँ."

आदमी अपने काम पर वापस चला गया और गुलाब की झाड़ी सोचनी लगी. फिर भी वह जितना अधिक सोचती, उसका गुस्सा उतना ही बढ़ता जाता - हाँ, हालाँकि वह आमतौर पर बहुत अच्छे व्यवहार वाली थी, उसने एक मधुमक्खी से गुस्से से बात की जो उससे मिलना चाहती थी. मधुमक्खी अभी भी जवान और डरपोक थी, इसलिए डर के मारे वहाँ से उड़ गई. तब गुलाब की झाड़ी को अपने कठोर व्यवहार पर खेद हुआ, क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से मिलनसार थी, और उसे इसलिए भी दुख हुआ क्योंकि वह मधुमक्खी से पूछ सकती थी कि क्या उस आदमी ने सच कहा था.

जब वह विचारों में इतनी मग्न थी, अचानक किसी ने उसे हिलाया और एक शरारती आवाज़ ने पूछा, "अच्छा, मेरे दोस्त, तुम क्या कोई सपना देख रही हो?"

गुलाब की झाड़ी ने अपनी अनगिनत आँखों से देखा और हवा को पहचान लिया, जो उसके सामने हँसते हुए खड़ी थी और अपना सिर हिला रही थी जिससे उसके लंबे-लंबे बाल उड़ रहे थे.

"हवा, प्रिय हवा!" गुलाब की झाड़ी ने खुशी से कहा, "तुम ऐसे आई हो जैसे तुम्हें बुलाया गया हो. कृपया मुझे बताओ कि क्या उस आदमी ने सच कहा था. और फिर उसने हवा को वो सब कुछ बताया जो उस आदमी ने उसे बताया था.

हवा अचानक गंभीर हो गई और उसने अपने दाँतों से इतनी ज़ोर से सीटी बजाई कि गुलाब की झाड़ी की शाखाएँ काँपने लगीं. "हाँ," उसने कहा, "यह सब सच है, और इससे भी बदतर. मैं पूरी दुनिया में घूमती हूँ और सब कुछ देखती हूँ. अक्सर, मैं गुस्से से इतना भर जाती हूँ कि मैं बड़बड़ाने लगती हूँ; फिर बेवकूफ लोग कहते हैं, 'कितना भयानक तूफ़ान आया है!'"

"देखो, अमीर लोग सच में सब कुछ खरीद सकते हैं?"

"हाँ," हवा ने गुर्राहट की. फिर अचानक वह हँसी. "देखो, वे मुझे पकड़कर कैद नहीं कर सकते. मैं गरीबों की दोस्त हूँ. मैं सभी देशों में उड़ती हूँ. बड़े शहरों में, मैं बदबूदार तहखानों के सामने खड़ी होती हूँ और उनमें दहाड़ती हूँ 'आज़ादी! न्याय!' मेहनतकश, कामकाजी लोगों के लिए मैं एक लोरी गाती हूँ, 'साहसी बनो, एकजुट रहो, लड़ो, तुम जीत जाओगे!' तब उन्हें एक नई ताकत महसूस होती है, उन्हें लगता है कि किसी साथी ने उनसे बात की है." वह खिलखिलाई, और उससे बगीचे की सभी पत्तियाँ हिलने लगीं. "धनवान मुझे कैद करना चाहते हैं, क्योंकि मैं संदेश लेकर जाती हूँ, लेकिन मैं उन पर सीटी बजाती हूँ. रात में मैं उनकी खिड़कियाँ खटखटाती हूँ ताकि वे अपने मुलायम बिस्तरों में लेटे हुए डर जाएँ, और फिर मैं चिल्लाती हूँ, 'देखो आलसी लोगों, अब तुम्हारा समय आ रहा है. दुनिया के मज़दूरों के लिए जगह बनाओ!' इससे वे बहुत डर जाते हैं, अपने कानों पर रेशमी चादरें खींच लेते हैं, खुद को सांत्वना देने की कोशिश करते हैं और कहते हैं: 'वो तो केवल हवा थी!'"

हवा ने अपना एक पैर ऊपर उठाया और पूरे वजन के साथ उसे शानदार सफेद घर की ओर धकेल दिया. खिड़कियाँ खड़खड़ाने लगीं, घर की कई चीज़ें टूट गईं. फिर एक महिला की चीख सुनाई दी. हवा हँसी, फिर उसने अपना पैर पीछे खींचा और गुलाब की झाड़ी से कहा: "फूल, तुम भी कुछ कर सकती हो. अमीर आलसियों के लिए मत खिलो, और फलों के पेड़ उनके लिए फल नहीं दें. लेकिन तुम मौज-मस्ती करने वाले और आलसी जीव हो. ज़रा ट्यूलिप को देखो जो पूरे दिन इतनी मजबूती से खड़े रहते हैं, हमेशा बस यही कहते 'हम कितने प्यारे हैं!' उनकी और कोई दिलचस्पी नहीं है."

गुलाब की झाड़ी की पंखुड़ियाँ गहरे लाल रंग की हो गईं, वह अपनी बहन ट्यूलिप के फूल से काफी शर्मिंदा थी.

हवा ने यह देखा और उसे दिलासा देने की कोशिश की. "तुम एक समझदार, दयालु झाड़ी लगती हो. मैं तुमसे अक्सर मिलने आऊँगी. मुझे विदाई उपहार के रूप में अपनी एक पंखुड़ी दे दो." उसने एक खिले हुए गुलाब की एक गहरी लाल पंखुड़ी ली. "खुश रहो - अब मैं चलती हूँ."

उसी समय गंदे कपड़े पहने दो बच्चे सड़क पर आए. वे गेट के सामने रुके और एक स्वर में चिल्लाए, "ओह, कितने सुंदर गुलाब हैं!" छोटी लड़की ने फूलों की ओर अपने हाथ बढ़ाए.

"हवा, प्यारी हवा," गुलाब की झाड़ी ने जितनी ऊँची आवाज़ में हो सका, पुकारा. "इससे पहले कि तुम उड़ जाओ, मेरे दो सबसे प्यारे गुलाब के फूल तोड़ो और उन्हें बच्चों की ओर फेंक दो. लेकिन सावधान रहना कि पंखुड़ियाँ गिर न जाएँ."

"क्या तुम मुझे इतना अनाड़ी समझती हो?" अपमानित हवा ने बड़बड़ाते हुए दो सुंदर गुलाबों को तोड़ा और उन्हें हल्के से, धीरे से बच्चों की ओर उड़ा दिया.

बच्चे खुशी से चिल्लाए, हवा उड़ गई और गुलाब की झाड़ी ने बच्चों की खुशी का आनंद लिया. उसका आनंद ज्यादा देर तक नहीं टिका. एक गुस्से से भरी आवाज ने बच्चों को डांटा. "यह कैसी धृष्टता है, मेरे बगीचे से फूल चुराना!"

गुलाब की झाड़ी ने रेशमी वस्त्र पहने और अंगूठियों से ढकी हुई एक महिला को उन दोनों बच्चों को धमकाते हुए देखा. उसका चिकना चेहरा गुस्से से लाल हो गया था. बच्चे डर गए और वहां से रोते हुए भाग गए.

गुलाब की झाड़ी ने क्रोध से गहरी साँस ली और उसकी साँस ने महिला के चेहरे की ओर मीठी खुशबू उड़ाई. वह करीब आ गई. "आह, सुंदर गुलाब. मुझे उन्हें तोड़ लेना चाहिए, अन्यथा सड़क की भीड़ उन्हें चुरा लेगी. और वे इतने महंगे किस्म के हैं."

इस पर गुलाब की झाड़ी क्रोधित हुई, जिससे उसके फूल आग की तरह लाल हो गए. "अगर मैं हवा की तरह मजबूत होती," उसने सोचा, "तो मैं इस दुष्ट महिला को पकड़ लेती और उसे इतना हिलाती ताकि वह बहरी और अंधी हो जाती. उस साधारण प्राणी के पास सबसे खूबसूरत फूलों से भरा पूरा बगीचा है और वह दो तुच्छ गुलाब के फूलों के लिए बच्चों को डांट रही है. लेकिन तुम मेरे फूलों में से एक भी नहीं ले सकती, तुम बुरी औरत, बस इंतज़ार करो."

और जैसे ही औरत फूल तोड़ने के लिए नीचे झुकी, गुलाब की झाड़ी ने एक टहनी से उसके चेहरे पर मारा, और अपने सारे काँटों को फैला दिया जैसे बिल्ली अपने पंजे फैलाती है, और औरत के चेहरे को खरोंच दिया.

औरत जोर से चिल्लाई. औरत अपने काम से रुकना नहीं चाहती थी, लेकिन गुलाब की झाड़ी भी उसकी तरह ही जिद्दी थी; जहाँ भी औरत का हाथ जाता, एक बड़ा काँटा निकलता और उसे तब तक खरोंचता रहता जब तक कि वह लहूलुहान न हो जाए.

अंत में फटे कपड़ों और खरोंचों से भरे गंदे हाथों वाली औरत को घर वापस लौटना पड़ा.

गुलाब की झाड़ी इस गरमागरम संघर्ष से पूरी तरह थक चुकी थी. उसकी कई हरी भुजाएँ लटकी हुई थीं, उसके फूल पीले पड़ गए थे, उसने धीरे से आह भरी. फिर भी उसने और गहराई से सोचा और वो एक शक्तिशाली संकल्प पर पहुँची.

देर शाम हवा गुलाब की झाड़ी को शुभ रात्रि कहने के लिए उड़ती हुई आई, और तब गुलाब की झाड़ी ने उससे गंभीरता से कहा, "मेरी बात सुनो, हवा बहन, मैं तुम्हारी सलाह मानूंगी, मैं अब बेकार लोगों के लिए नहीं खिलूंगी."

हवा ने गुलाब की झाड़ी के पत्तों और फूलों को अपने कोमल हाथों से सहलाया और गंभीरता से कहा, "बेचारी गुलाब की झाड़ी, क्या तुम्हारे पास इसके लिए ताकत होगी? तुम्हें बहुत कष्ट सहना पड़ेगा."

"हाँ," गुलाब की झाड़ी ने उत्तर दिया, "मुझे पता है. लेकिन मेरे पास वो ताकत होगी. बस तुम हर दिन आना और अपनी आज़ादी का गीत गाना, ताकि हमेशा मेरी हिम्मत बनी रहे."

हवा ने ऐसा करने का वादा किया.

फिर गुलाब की झाड़ी के लिए बुरे दिन आए, क्योंकि उसने कोई पानी न पीने का फैसला किया, ताकि उसके फूल खिलना बंद हो जाएं. जब उसका मित्र पानी का बर्तन लेकर आया, तो उसने अपनी छोटी जड़ों को अपने पास खींच लिया, ताकि कोई भी पानी की बूँद उन्हें छू न सके. आह, उसे कितना दर्द हुआ, उसे लगा कि वह बेहोश हो जाएगी. दिन में सूरज चमकता था, और वह हर घंटे और अधिक प्यासी होती जाती थी. वो हमेशा पानी के लिए और अधिक तरसती रहती थी. और आखिरकार, शाम को वह बेहद प्यासी हो गई, लेकिन वह पूरी घूंट पीने की हिम्मत नहीं कर पाई, उसे ठंडे कीमती तरल से दूर होना पड़ा, फिर से प्यास लगी. थोड़ी देर बाद उसे लगा कि वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकेगी. लेकिन हवा उड़ती हुई आई, उसे पंखा झलती हुई, धीरे-धीरे गाती हुई, "बहादुर बनो, बहादुर बनो! तुम जीत जाओगे!"

गुलाब की झाड़ी दिन-ब-दिन उस चमचमाते सफ़ेद घर को देखती जिसमें ऐसे लोग रहते थे जिनके पास वह सब कुछ था जो वे चाहते थे और फिर उस सड़क को देखती जहाँ गरीब लोग पतले, पीले चेहरों के साथ गुज़रते थे जो थके हुए और उदास थे, और इससे उसके दिल में नई ताकत आ गई.

वह लगातार बीमार और कमज़ोर होती जा रही थी; उसकी भुजाएँ कमज़ोर होकर लटक रही थीं, उसके फूलों की पंखुड़ियाँ गिर रही थीं, उसके पत्ते झुर्रीदार और पीले पड़ रहे थे. उसका पालन-पोषण करने वाला आदमी उसे उदास होकर देखता रहा और पूछता रहा. "क्या हो गया है तुम्हें, मेरी बेचारी गुलाब की झाड़ी?" और उसने उसकी मदद करने के लिए हर संभव उपाय आजमाया. लेकिन सब व्यर्थ. एक सुबह, एक सुंदर, खिली हुई गुलाब की झाड़ी के बजाय, उसे एक दुखी, मुरझाई हुई, मृत झाड़ी मिली.

वह वहाँ नहीं रह सकती थी, मुरझाई हुई शाखाएँ और फूल सुंदर बगीचे को खराब कर रहे थे. अमीर महिला ने आदेश दिया कि गुलाब की झाड़ी को बाहर फेंक दिया जाए. जैसे ही आदमी ने उसे खोदा, गुलाब की झाड़ी ने अपनी बची हुई ताकत को इकट्ठा किया और वो विनती करते हुए फुसफुसाई, "मुझे घर ले चलो! कृपया मुझे अपने घर ले चलो!"

उस आदमी ने उसकी इच्छा पूरी की. उसने गुलाब की झाड़ी को एक गमले में लगाया और उसे उस गरीब, छोटे से कमरे में ले गया जहाँ वह रहता था. उसकी बीमार पत्नी बिस्तर पर उठ बैठी और बोली, "आह, बेचारी गुलाब की झाड़ी, वह भी मेरी तरह बीमार है, लेकिन तुम हम दोनों को स्वस्थ कर दोगे."

मुरझाए हुए पत्ते और टहनियाँ कराह उठीं, "मुझे पानी दो! मुझे पानी दो!" आदमी ने उनकी बात सुनी और वो पानी का एक घड़ा ले आया. गुलाब की झाड़ी ने सारा पानी पी लिया. ओह, वो कितना आनंददायक था! उसकी जड़ों ने उत्सुकता से पानी को चूसा, उसकी शाखाओं से गुज़रने वाली स्वादिष्ट नमी ने उसे नया जीवन दिया. अगली सुबह, वह अपनी शाखाएँ उठा सकती थी; बीमार महिला एक बच्चे की तरह खुश थी और चिल्लाई, "वह ठीक हो जाएगी!"

और गुलाब की झाड़ी वास्तव में ठीक हो गई. थोड़ी ही दिनों में वह फिर से इतनी सुंदर हो गई कि बेचारा छोटा कमरा बगीचे की तरह सुगंधित हो गया. महिला के पीले गाल हर दिन गुलाबी होते जा रहे थे, उसकी ताकत वापस आ रही थी. "गुलाब की झाड़ी ने मुझे ठीक कर दिया है," महिला ने कहा, और जब उसने ये शब्द सुने तो गुलाब की झाड़ी पर लगे सभी फूल खुशी से गहरे लाल हो गए.

वह आदमी और उसकी पत्नी दयालु लोग थे. जो कुछ भी उनके पास था, उसे वे खुशी-खुशी आपस में बाँट लेते थे. वे थके हुए लोगों को खुश करने के लिए सावधानी से कुछ गुलाब तोड़ते थे.

गुलाबों में कुछ दूसरी जादुई शक्तियाँ भी थीं. गुलाब की झाड़ी ने अपने संघर्ष और पीड़ा के दिनों में हवा के गीत सीख लिए थे. अब उसके फूल अपने दोस्तों के लिए बहुत धीरे-धीरे वो गीत गा रहे थे, "एक साथ रहो! लड़ो! तुम जरूर जीतोगे!" तब लोगों ने कहा, "कितना अजीब है! फूलों की खुशबू हमें नई ताकत दे रही है. हम एक बेहतर दुनिया के लिए मिलकर लड़ेंगे."

लेकिन छोटे बच्चों के लिए गुलाब ने कोमल, प्यार भरी आवाज़ में गाया:

"छोटे बच्चों, जब तुम बड़े हो जाओगे, तो तुम अब गेट के सामने उदास होकर खड़े नहीं रहना होगा. पूरी दुनिया उन लोगों की होगी जो मेहनत करते हैं! हां पूरी दुनिया!"

गौरैया

"तो, लोग भी थक जाते हैं," गौरैया ने सोचा

गौरैया परिवार में झगड़े और असहमति का बोलबाला था. माँ गौरैया पूरे दिन अपने घोंसले में दुखी बैठी रही और पिता गौरैया, बड़बड़ाता रहा और हर चीज में दोष निकालता रहा. जो परिवार कभी इतना खुश था, वह अब पूरी तरह बदल गया था. और इस सारे दुख के लिए सबसे छोटी गौरैया को दोषी ठहराया गया. एक शाम को भोजन करते समय उसने संक्षेप में और साहसपूर्वक घोषणा की, "मैं अब स्कूल नहीं जाऊंगी. मैं उन कुलीनों द्वारा अपमानित होने से तंग आ चुकी हूँ. सबसे बढ़कर, मैं इस जीवन से थक गई हूँ. मैं इस दुनिया में बाहर जाना चाहती हूँ." उसने अपनी चोंच ऊपर उठाई और अपने माता-पिता की ओर विद्रोही भाव से देखा.

माँ गौरैया इतनी हैरान हुई कि उसके सारे पंख खड़े हो गए. वह असहाय होकर अपनी शरारती बच्ची पर चौंकी और वह केवल इतना ही कह सकी, "पीप, पीप."

लेकिन पिता गौरैया ने गुस्से में अपना मुँह इतना चौड़ा किया कि वह जिस कीड़े को खाना चाहते थे, वह तुरंत फिसल गया. वह एक कर्मठ व्यक्ति था, ज्यादा बात करने में विश्वास नहीं करता था, और फिर वो तुरंत अपनी पैनी चोंच से अपनी बेटी के चेहरे पर वार करने लगा.

युवा गौरैया पहले से भी अधिक विद्रोही ढंग से चिल्लाई, "मैं अब यहाँ और नहीं रहूँगी. मेरे लिए अब बहुत हो गया है. अब मैं असली दुनिया में जा रही हूँ." तब माँ गौरैया ने फिर से अपनी आवाज़ पाई और आँसू भरी आवाज़ में बोली, "तुम दुष्ट बच्ची हो. क्या इस तरह तुम अपने माता-पिता को उनके प्यार के लिए धन्यवाद देती हो? क्या हमने तुम्हें अच्छी तरह से नहीं पाला? तुम हमारे गाँव की पहली गौरैया हो जिसने प्रोफ़ेसर स्वैलो के वास्तुकला स्कूल में पढ़ाई की और कलात्मक घोंसले बनाना सीखा. तुम सबसे अच्छे समाज से ताल्लुक रखती हो और स्वैलो, स्टार्लिंग और येलो-बिल के साथ घुलमिल जाती हो. और तुम इस तरह अपना एहसान चुका रही हो?"

"मुझे अच्छे समाज की जरा भी परवाह नहीं है," उत्साहित युवा गौरैया ने उत्तर दिया. और उसने चुनौती देते हुए सीटी बजाई, "ट्वीट, ट्वीट!"

"कोई अन्य गौरैया ऐसा सम्मानजनक पेशा नहीं सीख रही है," माँ गौरैया ने निराशा से कहा.

फिर युवा गौरैया ने इतना शोर मचाना शुरू कर दिया कि पूरा घोंसला हिल गया. "एक सम्मानजनक पेशा, वास्तव में एक सुंदर पेशा. ऐसे घोंसले बनाना जिसमें दूसरे लोग रहते हों. सूरज की तपती धूप में काम करना, जगह-जगह से तिनके बटोरना, फिर उन्हें एक साथ बुनना, यह सुनिश्चित करना कि सब कुछ एकदम सही हो - और फिर अच्छी महिलाएँ और सज्जन लोग आकर मुझे वेतन के बदले मुझे थोड़ा सा कीड़ा दें, जिससे मुश्किल से मेरा पेट भर पाए. सबसे बढ़कर, ये अच्छे लोग स्वैलो, हमेशा अपने फ्रॉक-कोट पहने हुए; पीली चोंच, हमेशा अपने बढ़िया आभूषणों को दिखाते रहते हैं. और वे हमारे अपने लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, गर्व और घृणा से भरे हुए. वे मुझे आम मजदूर कहते हैं. मैं उस सबसे अब तंग आ चुकी हूँ. मैं उनके जितनी ही अच्छी हूँ, और शायद उनसे भी बेहतर हूँ."

माँ गौरैया डर के मारे सिकुड़ गई, लेकिन पिता गौरैया भड़क गए और जोर से चिल्लाए, "चुप हो जाओ, तुम खोई हुई आत्मा हो, तुम बेहया हो, तुम बोल्शेविक की तरह बात कर रही हो. तुम भूल गई हो कि मैं विदूषकों की परिषद का अध्यक्ष हूँ. मेरे बच्चे को कानून और व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह नहीं करना चाहिए."

"हाँ," माँ गौरैया ने कहा, "और मान लो कि पड़ोसी तुम्हारी बात सुन लें! फिर कितना भयानक होगा!"

युवा गौरैया बेशर्मी से हँसी, घोंसले के किनारे पर बैठ गई और उसने एक क्रांतिकारी गीत की सीटी बजाई.

पिता गौरैया जल्दी से उठे और उन्होंने अपनी पत्नी से धीमी आवाज़ में कहा, "उस युवा मूर्ख को देखो और उसे अच्छा व्यवहार सिखाओ. मुझे गायन समाज की बैठक में जाना है." फिर वह अपनी शरारती बच्ची की ओर एक नज़र डाले बिना ही उड़ गए.

माँ गौरैया ने गहरी साँस ली और शिकायत भरे स्वर में पूछा, "यह बताओ कि तुम वास्तव में क्या चाहती हो?"

युवा गौरैया अपनी माँ के पास आकर बैठ गई और एक मीठी मुस्कान के साथ बोली, "मैं दूर जाना चाहती हूँ माँ, बहुत दूर. विदेशी देशों में जहाँ हमेशा गर्मी रहती है."

"लेकिन मेरे प्यारी बच्ची, तुम जानती हो कि मूर्ख बच्चे भी अपने स्कूलों में यह बात सीखते हैं - कि गौरैया प्रवासी पक्षी नहीं है."

"मुझे इससे क्या मतलब? मैं यहाँ और बर्दाश्त नहीं कर सकती. हमेशा एक ही तरह की चीज़ें देखना; दूर-दूर तक चर्च की पुरानी मीनार, यहाँ हमारी नाक के सामने फार्महाउस और गोबर का ढेर. नहीं, मैं दूर जाना चाहती हूँ, बहुत दूर."

यह कहते हुए उसने अपने पंख फैलाए और खुद को घोंसले से बाहर धकेलकर अंतरिक्ष में चली गई. यह बहुत खतरनाक लग रहा था, लेकिन उसके पंख उसे हवा में सुरक्षित ले गए.

लेकिन युवा गौरैया किसी भी तरह से उतनी खुश नहीं थी, जितनी वह दिख रही थी. उसके माता-पिता के शब्दों ने उसके मन में तरह-तरह के संदेह पैदा कर दिए थे. "माँ वास्तव में सही थीं," उसने खुद से कहा. "गौरैया, प्रवासी पक्षी नहीं है. किसी ने कभी किसी गौरैया के बारे में नहीं सुना है जो महासागर को पार करके विदेशी भूमि पर गई हो. लेकिन मैं ऐसा करने वाली पहली पक्षी क्यों न होऊँ?" उसने खुद से पूछा, हिम्मत के साथ. "किसी को हमेशा पहला होना चाहिए. अगर मेरा प्रयास सफल होता है, तो मैं सभी गौरैया लोगों को यह साबित कर दूँगी कि उन्हें सर्दियों के मौसम में ठंड और भूख से मरने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि वे गर्म देशों में जा सकते हैं और वहाँ खुशी से रह सकते हैं. निश्चित रूप से, सागर...." युवा गौरैया का दिल हिम्मत हार गया, उसने सोचा कि उसके शिक्षक, स्वॉलो (निगल) ने एक बार उसे उस विशाल, जंगली पानी के बारे में बताया था जो कभी खत्म नहीं होता था, उन क्रोधित झागदार लहरों के बारे में जिनके ऊपर से एक व्यक्ति को हर दिन उड़ना पड़ता था. अगर किसी के पंखों की ताकत खत्म हो जाती, तो वह गिर जाता और समुद्र में विलीन हो जाता था. उसे लहरें निगल लेती थीं.

ये विचार आते ही गौरैया लगभग इस विचार को छोड़ना चाहती थी. वह सिकुड़ गई और काँपने लगी. फिर अचानक उसे याद आया कि कैसे पिछली कठोर सर्दियों में कई दुखी गौरैए भूख और ठंड से मर गई थीं.

"नहीं, नहीं," उसने खुद से कहा. "मुझे इतना कायर नहीं होना चाहिए. यह मामला सिर्फ़ मुझसे ही नहीं, बल्कि मेरे सभी भाई-बहन गौरैयाओं से, आने वाली पीढ़ियों की सभी गौरैयाओं से संबंधित है, जो मेरे मरने के बाद भी जीवित रहेंगी. अगर मैं उन्हें एक खुशहाल जीवन जीने में मदद कर सकती हूँ, तो यह यात्रा हर खतरे और हर बलिदान के लायक होगी." फिर बहादुर युवा गौरैया ने अगले दिन जाने का फैसला किया.

उसने वह रात अपने माता-पिता के घोंसले में बिताई, अपनी माँ के करीब, थोड़ा चुपके से रोई - क्योंकि उसके लिए भी घर छोड़ना मुश्किल था. पिता देर से लौटे, और वे काफी नशे में थे, उन्होंने खुद को अपने बिस्तर पर फेंक दिया ताकि वो तुरंत सो जाएं.

धूसर-सफ़ेद आसमान गुलाबी होने लगा; सुबह हवा के पंखों पर उड़ती हुई आई और दुनिया में रोशनी लेकर आई. युवा गौरैया जाग गई, आखिरी बार अपने सोए हुए माता-पिता को देखा, और उड़ गई. वह जानती थी कि उसे किस दिशा में उड़ना है, क्योंकि उसे स्वॉलो (निगलों) की कहानियाँ याद थीं. फिर वह ठीक उसी दिशा में उड़ गई.

सूरज आसमान में ऊपर चढ़ता गया, गर्मी बढ़ती गई, बेचारी गौरैया मुश्किल से साँस ले पा रही थी. उसके पंख इतने थके हुए और दुख रहे थे कि वह उन्हें मुश्किल से उठा पा रहा था. फिर भी, वह और आगे उड़ती गई. उसने तब तक आराम न करने का संकल्प लिया था जब तक कि छाया धरती पर न पड़ जाए.

वह कभी इतने लंबे दिन तक नहीं जी पाई थी. व्यर्थ ही उसकी चमकीली छोटी आँखें आसमान की खोज कर रही थीं, लेकिन सूरज का बड़ा सुनहरा गोला चमक रहा था, नीचे नहीं जा रहा था.

"मैं मूर्ख थी," गौरैया ने सोचा. "अभी मैं अपने घर में अपने घोंसले में बैठी हो सकती थी, या चेरी के पेड़ के पास पोखर में नहा रही हो सकती थी. आह, नहाना कितना सुखद होता!"

फिर भी, वह स्थिर रूप से उड़ती रही. लेकिन अब वह धीरे-धीरे उड़ रही थी, उसके पंखों की हर धड़कन उसे भयानक दर्द दे रही थी. उसे सूरज से नफरत होने लगी थी – वो निर्दयी चमकता हुआ लाल गोला जो नीचे नहीं जा रहा था. खुद को हिम्मत देने के लिए उसने एक छोटा सा गीत बनाया, उसे बहुत धीरे से गाया और अपने थके हुए पंखों को उसकी लय के साथ हिलाया.

"मेरा उद्देश्य मेरे भाइयों का उद्देश्य है,

मेरी ताकत उन सभी को बचाएगी;

अगर मैं असफल होंगी तो मैं दूसरों के साथ गलत करूंगी.

और तब उनकी जंजीरें कभी नहीं टूटेंगी."

आखिरकार, धरती पर बड़ी काली छाया पड़ने लगे. एक ताज़ी हवा बहने लगी, जिसने थकी हुई गौरैया को ठंडक पहुँचाई. हवा ने अपने शक्तिशाली पंखों पर गौरैया को धीरे से उड़ाया.

जैसे ही सूरज एक नीली पहाड़ी के पीछे डूबा, थकी हुई गौरैया एक बड़े घास के मैदान में उतरी. वह ऊँची घास में हाँफते हुए लेट गई. झींगुरों की कोमल चहचहाहट ने उसे सुला दिया; उसकी आँखें बंद हो गईं.

लोगों की कर्कश, तेज आवाजों ने उसे जगाया. एक गांठदार पुराने अखरोट के पेड़ के नीचे उसने दो फटे-पुराने, धूल से लथपथ लोगों को बैठे हुए देखा. उनमें से एक ने अपने फटे हुए जूते उतारे, अपने फफोलेदार पैरों को दुखी होकर देखा और कहा, "मैं अब और नहीं दौड़ सकता, मुझे अब एक दिन आराम करना चाहिए."

"बस आधा घंटा और," दूसरे आदमी ने सांत्वना देते हुए कहा. "बस अगले रेलवे स्टेशन तक. वहाँ हम एक मालगाड़ी में छिपेंगे और सुबह तक सवारी करेंगे. वहाँ से समुद्र बहुत दूर नहीं होगा."

गौरैया ने उनकी बातचीत ध्यान से सुनी थी. "तो, लोग भी थक जाते हैं," उसने सोचा, "और फिर वे सवारी करते हैं. मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, लेकिन मुझे पता है कि कोई इस तरह से खुद को थका नहीं सकता. अगर मनुष्य सवारी करते हैं, तो गौरैया क्यों नहीं सवारी कर सकती?" उसने उन लोगों का पीछा करने का फैसला किया, और चूँकि वे कुछ ही समय में चल दिए, इसलिए वह उनके पीछे-पीछे उड़ी.

वे एक घर पर पहुँचे जिसके सामने ज़मीन पर दो चमकती हुई पटरियां फैली हुई थीं. अब रात हो चुकी थी. सब कुछ अंधकार में छिपा हुआ था, केवल आकाश में तारे मंद-मंद चमक रहे थे. गौरैया उन दोनों आदमियों के पास रुकी और फिर प्रतीक्षा करने लगी. अचानक कुछ भयानक दिखाई दिया.

अंधकार में एक विशालकाय काला जानवर खड़खड़ाता हुआ आया, उसकी लाल आँखें इतनी चमकीली थीं कि कोई उन्हें बहुत दूर से देख सकता था, वह फुफकारता और हाँफता हुआ आया, उसके पीछे धरती हिल रही थी. वह पास आते ही भयानक रूप से चीखा. फिर अचानक वह रुक गया. उसने अपनी लंबी काली नाक से धुएँ के बादल छोड़े. गौरैया को आश्चर्य हुआ कि न तो वे दोनों आदमी, न ही बाकी लोग उस राक्षस से डरे. इसके विपरीत, वे उसके पास दौड़े, और उसके धुएँ में गायब हो गए. फिर गौरैया ने देखा कि राक्षस अपने पीछे कुछ काले घर खींच रहा था. उसने देखा कि दोनों आदमी इनमें से एक घर में घुस गए इसलिए वो उसी घर की छत पर उड़ गई. मुश्किल से वह संभल पाई थी कि राक्षस फिर से फुफकारने और हाँफने लगा और वो अपनी यात्रा पर निकल पड़ा.

बेचारी गौरैया को लगा कि वह डर के मारे मर जाएगी. राक्षस इतनी तेजी से भागा कि नन्हा पक्षी न कुछ सुन सकी और न कुछ देख पाई. घर पर वह अक्सर हवा के साथ खेलती थी और तेज गति का आनंद लेती थी. लेकिन यह बिलकुल अलग था. उसने खुद को बहुत छोटा कर लिया, खुद को मजबूती से स्थापित कर लिया और मान लिया कि अब उसका अंतिम समय आ गया था. अगर लोग इसे विश्राम कहते हैं, तो वो निश्चित रूप से अजीब प्राणी था. शायद वो इतना भयानक नहीं था क्योंकि वहाँ लोग थे. वह एक चतुर गौरैया थी और जब राक्षस सांस लेने के लिए फिर से रुका, तो वह घर की छत से नीचे उड़ गई और उसने जांचा. दरवाजा पूरी तरह से बंद नहीं था. गौरैया दरार में से डिब्बे के अंदर घुस गई, उसने एक अंधेरे कमरे में प्रवेश किया जहाँ कई बक्सों के ढेर थे. वह एक संदूक पर बैठ गई और देखने के लिए इंतजार करने लगी कि आगे क्या होगा.

राक्षस फिर से भागने लगा. गौरैया खुशी से हँसी; अब उसने सही अनुमान लगाया था. वह यहाँ चुपचाप, आराम से बैठी थी, और राक्षस उसे गुलाम जैसे आगे लेकर जा रहा था. तो, इसे लोग "सवारी करना" कहते हैं. सच में, लोग उतने मूर्ख नहीं हैं जितना उसने सोचा था.

राक्षस के अनगिनत पैर धरती पर धमाका करते हुए एक खड़खड़ाते, गड़गड़ाते, एक नीरस गीत गा रहे थे. गौरैया ने शब्दों का अर्थ समझा "दूर-तक! दूर-तक!" कुछ देर तक उसने गीत सुना, फिर वह सो गई.

वह बहुत देर तक सोई होगी. क्योंकि जब वह उठी तो सूरज आसमान में ऊँचा था और उसकी किरणें दरवाज़े की संकरी दरारों से अंधेरे कमरे में आ रही थीं. गौरैया ने देखा कि उसके दो परिचित दो ऊँचे बक्सों के बीच छिपे हुए थे. वे अच्छे मूड में लग रहे थे, एक दूसरे से बातें कर रहे थे और हँस रहे थे.

"हमने अपनी यात्रा का एक बड़ा हिस्सा बिना किसी परेशानी के तय कर लिया है," बड़े ने कहा. "अब हमें बस एक और दिन चलना है और एक और रात सवारी करनी है. फिर हम समुद्र तक पहुँच जाएँगे."

"हमें कितनी देर तक तैरना होगा?"

"लगभग पाँच दिन."

गौरैया डर गई. पाँच दिन उसे अंतहीन पानी में तैरना होगा; पाँच लंबे दिन वह आराम नहीं कर सकेगी या रुक नहीं पाएगी अगर वह खुद को लहरों में डूबने से बचाना चाहती थी. वह इसे कैसे झेल पाएगी? वह ध्यान से सोचने लगी. क्या लोग पानी में इतनी देर तक तैर सकते हैं? उसने गाँव के तालाब में लड़कों को नहाते देखा था, फिर भी वे कुछ ही समय में पानी से बाहर आ जाते थे और उनमें से कोई भी पूरे दिन पानी में नहीं रहता था. लेकिन शायद पालतू राक्षस भी हों जो लोगों को पानी के ऊपर ले जाते हों. फिर से, उसने दोनों लोगों को न छोड़ने और उनके द्वारा किए गए हर काम को करने का फैसला किया.

जब दोनों लोग रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी से बिना किसी की नजर पड़े कूद गए, तो गौरैया ने उनका पीछा किया. वह उनके बहुत करीब उड़ी. उसे लगा कि वे दोनों उसके दोस्त थे और जब तक वह उनके साथ रहेगी, तब तक उसे कुछ नहीं होगा.

दिन भर वे लोग खेतों और घास के मैदानों से होते हुए, अजीबोगरीब नुकीले चर्च की मीनारों वाले छोटे-छोटे गाँवों से होते हुए यात्रा करते रहे. दोनों में से छोटा आदमी लंगड़ाता था, वह केवल धीरे-धीरे चल सकता था. यह गौरैया को बहुत पसंद आया, क्योंकि अब उसे तेजी से चलने की जरूरत नहीं थी, वह आराम से उड़ सकती थी. जब लोग रुके, तो गौरैया ने उनका अनुसरण किया, इस बीच अपने भोजन की तलाश में, क्योंकि लंबी यात्रा ने उसे असामान्य रूप से भूखा बना दिया था. उसने कुछ अजीब पक्षियों से भी बातचीत की, जिनमें से सभी ने उसे अपनी यात्रा जारी न रखने की सलाह दी. प्रवासी पक्षियों ने उसे तिरस्कारपूर्वक देखा और व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, "क्या तुम मानते हो कि तुम भी हम जैसे महान लोगों की तरह ही लंबी यात्रा कर सकते हो? यात्रा करना, दुनिया को देखना, गर्म देशों में सर्दियाँ बिताना - यह आम पक्षियों के बस की बात नहीं थी."

एक बूढ़े ब्लैकबर्ड पुजारी ने, काले कपड़े पहने और गंभीरता से एक शाखा से उसे उपदेश दिया. "हमें भगवान की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए. भगवान ने आदेश दिया है कि गौरैया को उत्तर में ही सर्दियाँ बितानी चाहिए."

"अगर भगवान ने आदेश दिया है कि हमारे सभी लोग ठंड और भूख से मर जाएँगे और केवल कुलीन वर्ग, पूँजीपति, स्वॉलो (निगल) और स्टार्लिंग की तरह, गर्म स्थानों पर उड़ जाएँगे, तो मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहती!" गौरैया चिल्लाई और उसके पंख गुस्से से खड़े हो गए.

बूढ़े ब्लैकबर्ड पुजारी ने अपनी चोंच से अपने चमकते पंखों को संवारा और बेवजह गुर्राया. लेकिन गौरैया दुखी थी. "पक्षी एक-दूसरे के प्रति कितने क्रूर हैं," उसने खुद से सोचा. "मैं कुछ ऐसा करना चाहती हूँ जिससे सबको मदद मिले, लेकिन उलटे मेरा मज़ाक उड़ाया जा रहा है. क्या कोई मुझे समझ नहीं सकता?"

"सुनो, सुनो!" एक बहुत ऊँचाई से एक नरम आवाज़ ने पुकारा, और एक युवा लार्क बिजली की तरह तेज़ी से नीचे की ओर उदास गौरैया की तरफ़ गिरी. "मैं तुम्हें समझता हूँ. हर कोई मेरा मज़ाक उड़ाता है, क्योंकि मैं उनकी तरह धरती के करीब नहीं उड़ता, बल्कि हमेशा ऊपर और ऊपर, नीले आसमान में उड़ने की कोशिश करता हूँ. निराश मत हो, प्यारी दोस्त, तुम अपने लक्ष्य तक पहुँच जाओगी."

युवा लार्क, गौरैया के काफी करीब उड़ा, उसने उसे देखा और कहा, "मेरे लिए थोड़ा उड़ो, भाई, ताकि मैं देख सकूँ कि तुम्हारे पंख कितने मज़बूत हैं."

गौरैया उड़ी, लार्क के ऊपर मंडराती हुई.

जब वह वापस लौटे तो उसने उदास गौरैया को देखा और गंभीरता से कहा, "मेरी दोस्त, तुम्हारे पंख तुम्हें महासागर के पार नहीं ले जा सकते. लेकिन तुम्हें इस कारण से हार नहीं माननी चाहिए, तुम्हें वैसा ही करना चाहिए जैसा मनुष्य करते हैं, जो उड़ नहीं सकते और वे फिर भी पूरी दुनिया की यात्रा करते हैं. उन्होंने एक प्रकार का घर बनाया है जो पानी के ऊपर तैरता है. वे इसे जहाज कहते हैं. तुम्हें भी वही करना चाहिए..."

गौरैया ने अंत तक सुनने का इंतजार नहीं किया. बातचीत के दौरान दोनों व्यक्ति चले गए थे, और अब गौरैया को वो दूर से दो काले धब्बों की तरह दिखाई दिए. भयभीत होकर वह चिल्लाई. "मेरे दोनों आदमी मुझे छोड़कर चले गए हैं," और फिर वह जितनी तेजी से हो सकता था, उनके पीछे भागी.

जब अंधेरा हो गया, तो वे लोग एक बार फिर मालगाड़ी में घुस गए. गौरैया ने उनका पीछा किया और वो पूरी रात सोती रही, जबकि काला राक्षस फिर से उसे पहाड़ियों और पहाड़ों, नदियों और झरनों से होते हुए ले गया.

जैसे ही भोर हुई, दोनों व्यक्ति ट्रेन से बाहर निकले और गौरैया उनके पीछे-पीछे उड़ी. वे थोड़ी देर चले, फिर गौरैया ने अपने सामने पानी का एक विशाल सागर देखा. अंतहीन, उसकी दृष्टि से परे, पानी का यह नीला-भूरा शरीर फैला हुआ था, और इसकी सतह पर जंगली, सफेद-टोपी वाले, राक्षसी रूप से ऊंचे लहरें उठ रही थीं.

तो यह वह महासागर था जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था. गौरैया ने इस भयानक पानी को देखकर खुद को बेहद छोटा और असहाय महसूस किया. सागर की तुलना में वह क्या था? एक बेचारा, असहाय छोटा पक्षी, एक छोटा सा प्राणी. गहरी आहें भरते हुए उसका छोटा सा सीना ऊपर उठा; उसकी चमकीली आँखों से आँसू बहने लगे. "काश मैं घर पर होती, अपने सुरक्षित छोटे से घोंसले में," वह खुद से चिल्लाई, "तब मैं माँ के पंखों के नीचे रेंग सकती थी."

लहरें भयावह रूप से, धमकी भरे अंदाज में दहाड़ रही थीं; सफेद झाग ऊपर की ओर उछल रहे थे. दोनों आदमी नम, रेतीली जमीन पर बेफिक्र होकर चल रहे थे. धड़कते दिल के साथ, गौरैया उनके पीछे-पीछे चली. और फिर उसने कुछ आश्चर्यजनक देखा. एक बड़ी खाड़ी में कुछ अजीब चीजें उछल रही थीं. वे कुछ हद तक एक घर की तरह ही थे, लेकिन उनमें कुछ खिड़कियाँ और ऊँची चिमनियाँ थीं जिनसे भारी भूरा धुआँ निकल रहा था; कुछ चीजें जंगल की तरह लग रही थीं; बिना शाखाओं वाले नंगे पेड़ उसमें उग रहे थे. हालाँकि इन पेड़ों पर न तो फल थे और न ही पत्ते, गौरैया उन्हें देखकर खुश थी. उन्होंने उसे कुछ आत्मविश्वास दिया.

अब उसे घर जैसा महसूस होने लगा. लेकिन यह कितना अजीब था कि पेड़ों वाले ये घर लहरों पर ऊपर-नीचे उछल रहे थे. अचानक गौरैया को लार्क के शब्द याद आए. "इन घरों को जो पानी पर तैरते हैं लोग उन्हें 'जहाज' कहते हैं." अच्छा तो, ये जहाज थे! इनमें से किसी एक घर में वह गर्म देशों की यात्रा करेगी.

लेकिन उसे कौन सा जहाज चुनना चाहिए?

उसे लगा कि घर पर सबसे बड़े पेड़ हवा का सबसे अच्छा सामना कर सकते थे. जाहिर था कि यही बात जहाजों के बारे में भी सच होगी, इसलिए उसे सबसे बड़ा जहाज ही चुनना चाहिए.

उसके दो दोस्त एक छोटे जहाज पर गए, और गौरैया ने आवाज़ लगाई, "शुभकामनाएँ! शुभकामनाएँ!" लेकिन शायद उन्होंने उसे नहीं सुना.

गौरैया एक विशाल जहाज पर उड़ गई जिसकी चिमनियों से धूसर धुएँ के बड़े बादल निकल रहे थे, और खुद को एक पत्ती रहित पेड़ की चोटी पर छिपा लिया.

नीचे कितना शोर और उत्साह था. अनगिनत लोग इधर-उधर भाग रहे थे, एक-दूसरे को पुकार रहे थे और चिल्ला रहे थे; चीजें खड़खड़ा रही थीं, बड़ी चिमनियाँ ज़ोर से चीखीं, एक पुल जो नाव को जमीन से जोड़ता था अब हवा में उड़ा और फिर एक धमाके के साथ नाव पर आकर गिरा. नाव अपनी यात्रा पर चल पड़ी. धीरे-धीरे, गंभीरता से जहाज ने दोनों तरफ बुदबुदाते पानी को चीरा और आगे बढ़ा. पत्तों रहित पेड़ों वाला बड़ा घर, छोटी चिड़िया का नया घर, जमीन से दूर तैर गया.

शोर और जल्दबाजी से गौरैया का दिमाग काफी चकराया हुआ था. और अब उसे एक और बड़ा डर सता रहा था. अचानक एक युवक उसके पेड़ पर चढ़ गया. गौरैया को लगा कि वह उसे पकड़ना चाहता था, लेकिन उस युवक ने गौरैया को नोटिस नहीं किया और थोड़ी देर बाद वापस उतर गया. जैसे-जैसे अंधेरा होने लगा, नाव शांत हो गई और केवल लहरों का शोर सुनाई दिया. गौरैया अपने पेड़ से उड़कर छत पर बैठ गई, जहाँ वह जल्द ही सो गई.

जब वह सुबह उठी, तो उसने सोचा कि वह डर के मारे मर जाएगी. जमीन गायब हो गई थी. वह जिधर भी देखती, उसे सिर्फ पानी दिखाई देता; बड़ी-बड़ी भूरी लहरें जहाज़ पर लुढ़क रही थीं, उसे धीरे-धीरे हिला रही थीं, जैसे हल्की हवा पेड़ों में घोंसलों को हिलाती है. कहीं कोई पेड़, झाड़ी, फूल नहीं. नाव विशाल महासागर पर अकेली तैर रही थी, और पानी कभी खत्म होता नहीं दिख रहा था.

बेचारा गौरैया खुद को काफी अकेला और वीरान महसूस कर रही थी. "काश मुझे कोई पक्षी मिल जाता," उसने आह भरी. "भले ही वह कोई घमंडी स्वॉलो (निगल) या कोई अजीब ब्लैकबर्ड ही क्यों न हो. कम-से-कम मैं किसी ऐसे पक्षी से बात कर सकती थी जो मेरी दुनिया को जानता हो, जो मेरी भाषा बोलता हो." आखिरकार, उसने अपनी सारी हिम्मत खो दी और वो फूट-फूट कर रोने लगी.

"तुम कौन हो?" अचानक एक पतली, तीखी आवाज़ ने पूछा, और गौरैया ने देखा कि उसके सामने एक छोटा चूहा खड़ा है, जो बड़ी गोल आँखों से उसे घूर रहा था.

गौरैया खुश थी, क्योंकि वह घर पर चूहों से परिचित थी. वह नीचे झुकी और उसने चूहे के सवालों का जवाब दिया.

"तुम एक बहादुर गौरैया हो," चूहे ने उसकी कहानी सुनने के बाद कहा. "मैं तुम्हारा अपने जहाज़ पर स्वागत करता हूँ."

"तुम्हारे जहाज़ पर?" गौरैया ने कहा. "मैंने सोचा था कि जहाज़ लोगों का है."

"लोग भी यही मानते हैं," चूहे ने तीखी आवाज़ में जवाब दिया. "लेकिन क्या तुम नहीं जानतीं कि लोग मानते हैं कि सब कुछ उनका ही है?"

"यह सच था. घर पर किसान का मानना था कि चर्च की मीनार उसकी थी, और फिर भी यह बिल्कुल स्पष्ट था कि चर्च की मीनार हम गौरैयों के लिए बनाई गई थी."

जब वे इस तरह से बात कर रहे थे, तो एक बहुत बूढ़ा चूहा आया और बोलने लगा. "सभी लोग यह नहीं मानते कि सब कुछ उनका है," उसने विद्वान भाव से कहा. "ऐसे लोग भी हैं जिनके पास कुछ भी नहीं है. तुम जहाज़ पर यह देख सकती हो. ऊपर बड़े-बड़े, सुंदर कमरों में लोग रहते हैं, और दिन भर खाते रहते हैं. जब मैं उनके सामने परोसे जाने वाले स्वादिष्ट भोजन की खुशबू लेता हूँ, तो मेरे मुँह में पानी आ जाता है."

"लेकिन नीचे इतने अधिक लोग भरे हुए हैं कि उन्हें रात में लेटने के लिए भी जगह नहीं मिलती, और कई लोगों के पास पूरी यात्रा में खाने के लिए सिर्फ़ सूखी रोटी ही होती है. यह बेवक़ूफ़ाना मुहावरा 'मेरी नाव' भी तुमने लोगों से ही सीखा होगा," उसने चूहे को डाँटते हुए कहा. "तुम जानते हो कि सब आम चीज़ें हमारी हैं. मुझे तुमसे झूठी बातें सुनने की उम्मीद नहीं थी."

"माफ़ करना, दादा," छोटे चूहे ने विनती की.

"तुम यहाँ अजनबी हो," दादा चूहे ने गौरैया से कहा. "हम तुम्हारी मदद करेंगे, ताकि तुम लंबी यात्रा को झेल सको. मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम अमीर लोगों के पास मत जाना, वे तुम्हारे साथ एक या दो दिन खेलेंगे, और फिर तुम्हें भूल जाएंगे. देखो, तुम गरीब लोगों के बीच जाना जो निचले डेक पर है, वहाँ तुम्हें कुछ ब्रेडक्रंब मिलेंगे, और वे लोग तुम्हारे साथ अच्छा सलूक करेंगे क्योंकि वे जानते हैं कि एक गरीब, दुर्भाग्यपूर्ण प्राणी कैसा महसूस करता होगा."

गौरैया ने बुद्धिमान दादी चूहे की सलाह का पालन किया और जल्द ही महसूस किया कि उसने सच कहा था. बच्चे उससे खुश थे, और उन्हें जो थोड़े-बहुत ब्रेडक्रंब मिलते थे उनमें से कुछ बचाकर उन्होंने गौरैया को दिए. और क्योंकि वे बच्चे थे, वे गौरैया की भाषा समझते थे, और उसके साथ बातचीत करते थे. इस तरह गौरैया ने कई दुखद कहानियाँ सुनीं. बच्चों ने गरीबी और संकट के बारे में बताया; उनके माता-पिता को कितनी मेहनत करनी पड़ती थी और कितनी बार घर में खाने के लिए कुछ नहीं होता था. ईमानदार गौरैया को यह सुनकर बहुत दुख हुआ. "मनुष्यों के लिए भी एक सुंदर भूमि होनी चाहिए, जहाँ परिस्थितियाँ अच्छी हों और उन्हें भूख और ठंड से नहीं मरना पड़े," उसने अपने छोटे दोस्त से कहा.

"शायद," एक पीली सी लड़की ने कहा. "लेकिन हमें अभी तक उस तक पहुँचने का रास्ता नहीं मिला है."

"जब मैं बड़ा हो जाऊँगा," काले कपड़े पहने एक छोटे लड़के ने कहा, "तब मैं उस ज़मीन की तलाश में निकलूँगा. जब मैं उसे पा लूँगा तो मैं सभी गरीब लोगों को वहाँ ले जाऊँगा."

दोनों चूहे भी अक्सर गौरैया से मिलने आते थे, वे हमेशा शाम को आते थे, जब सब कुछ शांत होता था. इस तरह एक लंबा समय बीत गया, और एक दिन गौरैया को दूर से ज़मीन दिखाई दी, घर और पेड़ दिखाई दिए और फिर वो जान गई कि अब उसका लक्ष्य पूरा हो गया है. धूसर सागर बिल्कुल नीला हो गया था और धूप में चमक रहा था. बहुत गर्मी थी, और दादा चूहे ने कहा कि वहाँ की ज़मीन पर सर्दी नहीं पड़ती थी.

जब जहाज उतरा, तो गौरैया अपने दोस्तों के पीछे कुछ देर तक उड़ती रही और फिर अपने नए घर के बारे में सोचने लगी.
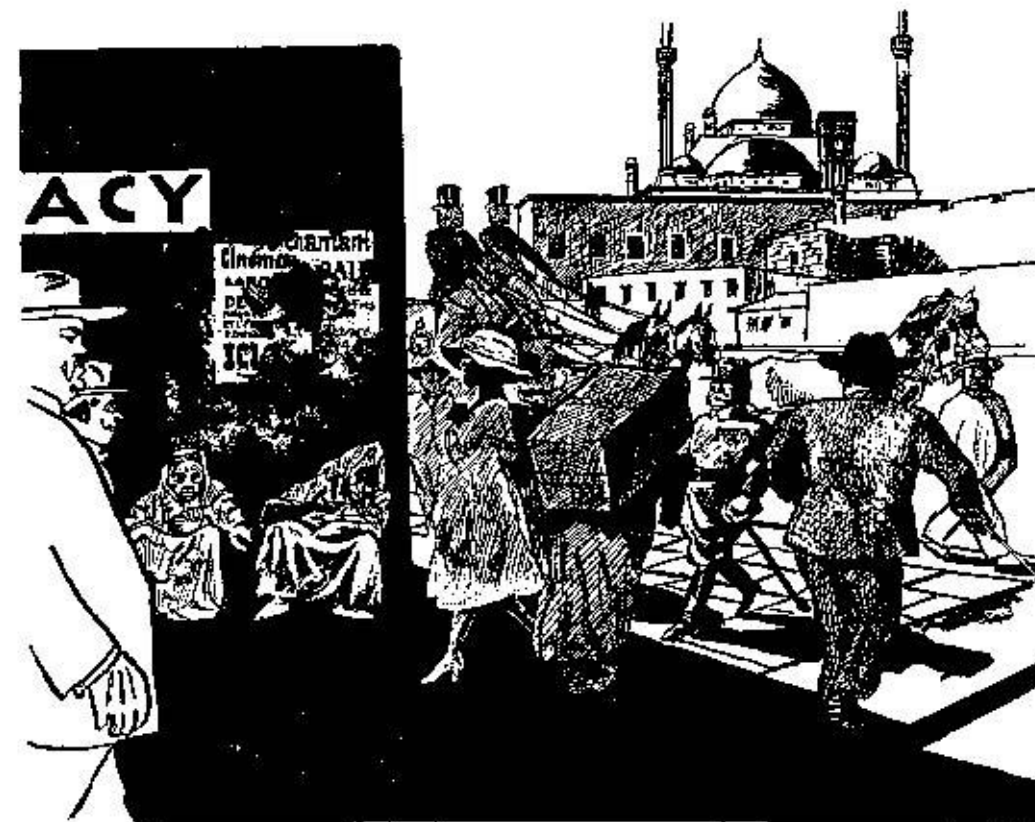
सभी लोगों के चेहरे भूरे थे और उन्होंने अजीबोगरीब कपड़े पहने थे. महिलाओं के चेहरे ढके हुए थे ताकि लोग केवल उनकी बड़ी काली आँखें ही देख सकें. उसने अजीबोगरीब जानवर भी देखे जो चार पैरों पर चलते थे और उनकी पीठ पर बड़े-बड़े कूबड़ थे. यहाँ तक कि वहाँ के पेड़ भी उसके घर के पेड़ों से अलग थे, कुछ में लंबे नुकीले पत्ते और भूरे फल थे जिन्हें गौरैया ने खूब पसंद किया. खाने के लिए बहुत कुछ था; यहाँ किसी गौरैया को भूखा नहीं रहना पड़ता था, और न ही यहाँ बर्फ़ या ठंड थी.

"क्या यह गरीब लोगों के लिए भी सही देश नहीं है?" गौरैया ने खुद से पूछा. लेकिन फिर उसने देखा कि इस धूप वाली ज़मीन पर अमीर और गरीब दोनों तरह के लोग थे. वहाँ भी कुछ लोग आलीशान कपड़े पहने हुए हैं और दूसरे फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे, कि कुछ आलसी लोग सुंदर गाड़ियों में सवार थे और कुछ भारी बोझ ढो रहे थे. और उसने सोचा, "गौरैयों के लिए स्वर्ग ढूँढना उस देश से कहीं ज़्यादा आसान है जहाँ गरीब लोग खुशी का आनंद ले सकें." इससे उसे बहुत दुख हुआ, क्योंकि अपनी यात्रा के दौरान उसने गरीब लोगों से प्यार करना सीखा था. "लेकिन यह कितना अजीब था. लोग जंगली जानवरों को पाल सकते थे और उन्हें सभी देशों में ले जा सकते थे, वे पानी पर तैरने वाले घर बनाना जानते थे और फिर भी वे इतने लोग गरीब और बेसहारा थे और वे कुछ दुष्टों को अपना सब कुछ हड़पने देते थे."

अब जब वह गर्म देश में पहुँच गई थी तो गौरैया ने अपनी लंबी और थकाऊ यात्रा से आराम किया, आलस से उड़ती रही और उसने अपनी हर रात एक अलग पेड़ पर बिताई.

एक दिन वह एक खूबसूरत हरी धारा के पास आई और उसके रास्ते में उड़ती रही. फिर वह एक बड़े, विशाल मैदान में पहुंची. पहले तो उसे लगा कि वह फिर से समुद्र में पहुँच गई थी, लेकिन जहाँ तक वह देख सकती थी वहाँ तक सिर्फ महीन पीली रेत थी. दूरी पर उसने रेत से कुछ निकलता हुआ देखा जो उसे एक राक्षसी जानवर जैसा लगा. वह उसके करीब गई और देखा कि यह वास्तव में एक विशालकाय प्राणी था जिसका सिर इंसान जैसा था और दो बड़े पंजे थे. यह भूरे-भूरे पत्थर से बना था और आंशिक रूप से रेत से ढका हुआ था.

बदसूरत जानवर बिल्कुल शांत पड़ा था और गुस्से से मुस्कुरा रहा था. गौरैया ने सावधानी से प्रणाम किया: क्या जानवर उसे खाना चाहेगा? लेकिन नहीं, उसने विनम्रतापूर्वक उसका अभिवादन स्वीकार किया और कहा: "मैं यहाँ हज़ारों सालों से लेटा हुआ हूँ, फिर भी मैंने कभी तुम्हारे जैसा पक्षी नहीं देखा. तुम कौन हो? तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

गौरैया ने अपनी कहानी सुनाई और बड़े जानवर ने धैर्यपूर्वक सुना. फिर छोटी चिड़िया ने पूछा, "क्या तुम मुझे बताओगे कि तुम कौन हो? हमारे देश में तुम्हारे जैसा कोई जानवर नहीं है."

बड़ा जानवर हँसा और जवाब दिया, "लोग मुझे स्फिंक्स कहते हैं. मैं इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि मैंने अपने सालों की गिनती ही खो दी है; मैंने सब कुछ देखा है, सब कुछ जानता हूँ."

"मेरे देश में उल्लू भी यही कहते हैं," गौरैया ने तीखी टिप्पणी की.

स्फिंक्स ने उसे गुस्से से देखा. "उल्लू एक घमंडी शेखी बघारने वाला पक्षी है!" वह उत्साह से चिल्लाया.

"माफ़ करना!" गौरैया ने डरते हुए हकलाते हुए कहा. "मैं आपका अपमान नहीं करना चाहती हूँ, लेकिन तुम उल्लू से कहीं अधिक बूढ़े दिखते हो."

"वास्तव में मैं बहुत बूढ़ा हूँ. मैं अपनी उम्र को हज़ारों साल में गिनता हूँ."

"तुमने कितने साल देखे होंगे!" गौरैया चिल्लाई.

स्फिंक्स ने अपना विशाल मुँह खोला और इतनी ज़ोर से जम्हाई ली कि रेत उसके चारों ओर उड़ने लगी मानो बवंडर ने उसे मारा हो.

"1000 सालों से," उसने कहा. "मैंने हमेशा यही देखा है कि जो लोग धनी और खुश हैं, वे अपने भूखे गुलामों को काम करने के लिए मजबूर करते हैं. पहले गुलामों को कोड़ों से चलाया जाता था. जब वे सूरज की गर्मी से थक जाते थे, तो ओवरसियर उन्हें कोड़ों से पीटता था. अक्सर इन गुलामों को पैरों में जंजीरों से बांधकर काम पर रखा जाता था, ताकि वे भाग न जाएँ. बाद में कोड़े गायब हो गए, स्वामी अपनी दयालुता का बखान करते हुए कहते थे, 'इन प्रगतिशील समय में, कोई भी व्यक्ति गुलाम नहीं है.' लेकिन गुप्त रूप से उन्होंने एक भयानक कोड़ा छिपाया, भूख, और इसने लोगों को गुलामी में धकेल दिया. मैं यहाँ से लोगों को गुजरते हुए देखता हूँ, अमीर अजनबी जो जिज्ञासा से इस देश में आते हैं, और मैं गरीब अरबों को भी देखता हूँ, जो खच्चर चलाने का काम करते हैं और भारी पत्थर खींचते हैं, और कुछ खजूर और थोड़ी सी मक्का खाकर मुश्किल से जीवित रहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उनके पूर्वज हज़ारों साल पहले थे."

स्फिंक्स चुप हो गया, और वो उदास होकर रेगिस्तान को देख रहा था. वह फिर बोला, "हजारों सालों से यहाँ भव्य पोशाक पहने, आभूषण पहने पुजारी थे, जो अमीर लोगों की ही श्रेणी में आते थे. वे लोगों को उपदेश देते थे, उन्हें धमकाते थे कि अगर वे अपने भाग्य से असंतुष्ट हुए तो देवताओं का कोप भड़केगा. आज ये पुजारी काले कपड़े पहनते हैं, लेकिन वे भी झूठ बोलते हैं और अमीर लोगों के साथ खड़े होते हैं, वे भी एक ऐसे भगवान की पूजा करते हैं जो एक बुरा मैकेनिक था.

“हजारों सालों से यह हमेशा ऐसा ही रहा है.” और फिर, स्फिंक्स ने जम्हाई ली.

"क्या तुम भी भविष्य नहीं देख सकते, बुद्धिमान जानवर?" गौरैया ने शरमाते हुए पूछा, "हाँ, मैं भी यही देख सकता हूँ. मेरी बात सुनो, नन्ही चिड़िया. एक दिन आएगा जब सभी गुलाम अपने उत्पीड़कों के खिलाफ़ एक भयानक संघर्ष में उठ खड़े होंगे. लंबी खूनी लड़ाइयों के बाद वे जीतेंगे और फिर एक नई दुनिया होगी, जहाँ सब कुछ संपत्ति सभी लोगों की होगी और सभी लोग आज़ाद होंगे. आज भी धरती उस खुशी की उम्मीद में काँपती है, और शांत रात में मैं उसकी काँपती हुई आवाज़ महसूस करता हूँ. हज़ारों सालों से मैंने किसी प्राणी से बात नहीं की है, मैं तभी फिर से बोलूँगा जब आज़ादी का दिन आएगा. तब मेरी आवाज़ आज़ाद लोगों के उल्लास में शामिल होगी."

गौरैया रेगिस्तान से उड़कर बाहर आई क्योंकि वहाँ उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिला. वो वापस नदी की ओर गई, और वहाँ उसने कई सुखद दिन बिताए.

एक दिन वह नदी के किनारे एक पत्थर पर बैठी थी, जब उसने जानी-पहचानी आवाज़ें सुनीं, "ट्वीट! ट्वीट!"

उसने ऊपर देखा और तीन स्वॉलो (निगलों) को देखा जो धीरे-धीरे उसकी ओर उड़ रहे थे.

"क्या तुम पहले से ही यहाँ हो?" गौरैया ने आश्चर्य से पूछा.

"ज़रूर, ज़रूर," स्वॉलो चहक उठे. "हमारे देश में तेज़ हवाएँ चल रही हैं, रात में घास के मैदानों में ठंड है, सर्दी आ रही है."

इससे गौरैया कितनी डर गई. यहाँ इस खूबसूरत ज़मीन पर जहाँ उसके पास बहुत सारे मोटे कीड़े और गर्म धूप थी, वह अपने गौरैया भाइयों-बहनों के बारे में भूल गई थी. और इस बीच, जानलेवा सर्दी आ गई थी! उसे घर भागना होगा ताकि वो उन्हें सिखा सके कि धूप वाली ज़मीन पर वे कैसे पहुँचें. क्या वह समय पर वहाँ पहुँच पाएगी? वह कितनी स्वार्थी थी; अगर गौरैए घर पर ठंड से ठिठुर रही थीं और भूख से मर रही थीं, तो यह उसकी गलती होगी.

जब वह यह सोच रही थी, तभी उसने अपने छोटे पंख फैलाए और समुद्र की ओर उड़ गई.

बंदरगाह में कई चांदी-सफेद सीगल उड़ रहे थे, चिल्लाते हुए, "तूफ़ान आ रहा है! तूफ़ान आ रहा है!"

"कौन सा जहाज़ उत्तर की ओर जा रहा है?" उसने जल्दी से पूछा.

"कोई भी नहीं," एक सीगल ने उत्तर दिया; लेकिन यह सच नहीं था, वे अप्रिय पक्षी थे और गौरैया को डराना चाहते थे.

लेकिन उसने उन पर विश्वास किया. "तो मुझे समुद्र के ऊपर उड़ना चाहिए," उसने डरते हुए सोचा. "मुझे यह करना ही होगा, क्योंकि मेरे गौरैया भाइयों-बहनों का जीवन या मृत्यु, मुझ पर निर्भर है. मुझे कुछ अच्छा करना होगा."

दुखी होकर, उसने एक बार फिर गर्म देश की जमीन की ओर देखा; फिर वो विशाल जल पर उड़ गया.

जंगली लहरें उठीं, तूफान आया और बारिश हुई. कुछ ही घंटों में, गौरैया इतनी थक गई कि वह अब और ऊंची उड़ान नहीं भर सकती थी. लहरों ने उसके पंखों को गीला कर दिया; वे पानी से भारी हो गए और उसके पंख उसे और भी गहरे नीचे खींच रहे थे. एक राक्षसी लहर सफेद बाहों के साथ उसके पास पहुँची और गौरैया समुद्र में गिर गई और लहरों द्वारा निगल ली गई.

इस कारण से, गौरैयों को हर सर्दी में ठंड और भूख से मरना पड़ता है, क्योंकि उन्हें धूप वाले देश का रास्ता दिखाने के लिए और कोई और साहसी गौरैया आगे नहीं आई.

लेकिन क्या गौरैया ने इतना कष्ट सहा और वो व्यर्थ ही मर गई?

नहीं, जहाज पर छोटे काले बालों वाले लड़के ने गौरैया द्वारा बताई गई कहानी पर विशेष ध्यान दिया था और गौरैया द्वारा अपने गौरैया भाइयों के लिए क्या करना चाहती थी, यह भी सुना था और यह छोटा लड़का अपने साथी मनुष्यों के लिए भी वही करना चाहता था. वह बड़ा हुआ और जहाँ भी उत्पीड़ित श्रमिक अपने मालिकों के खिलाफ संघर्ष करते थे, वो उनका नेतृत्व करता था. लेकिन काले बालों वाले लड़के की कहानी, उसके जीवन और उसकी मृत्यु की कहानी, एक अलग कहानी है और वो मैं बाद में सुनाऊँगा.

छोटा भूरा कुत्ता

"छोटा भूरा कुत्ता"

वह एक बदसूरत भूरा कुत्ता था जिसके लंबे रेशमी-मुलायम कान और एक झाड़ीदार पूंछ थी. वह एक शानदार अस्तबल में पैदा हुआ था जो एक अमीर आदमी का था. वो अमीर आदमी एक बड़ी जागीर में रहता था जिसमें बड़े खेत और घास के मैदान थे. और इन खेतों में बड़ी मात्रा में गन्ना उगता था, बड़े, गोल, चिकने गन्ने जिनमें मीठी चीनी होती थी. गन्ने के बागानों में सैकड़ों नीग्रो काम करते थे, पुरुष और महिलाएँ, और नीग्रो उस अमीर आदमी के थे जिसने उन्हें बाजार से खरीदा था जैसे वह मवेशी खरीदता था, क्योंकि यह कहानी बहुत पहले की है, उन दिनों जब अमेरिका में गुलामी थी.

अमीर आदमी अपने गुलामों के साथ जो चाहे कर सकता था. अगर उसका मूड खराब होता, तो वह उन्हें कोड़े मारने की अनुमति देता; अगर वे इस क्रूर व्यवहार का विरोध करने की हिम्मत करते तो उन्हें और भी क्रूर सजा दी जाती - उन्हें नंगा कर दिया जाता, शहद से पोत दिया जाता और एक पेड़ से बाँध दिया जाता. शहद की गंध से मधुमक्खियाँ आकर्षित होतीं जो बड़े झुंड में आतीं, गुलाम के शरीर पर बैठतीं, शहद चूसतीं और बंधे हुए आदमी को तब तक डंक मारतीं जब तक कि वह दर्द से बेहोश न हो जाता. इसके अलावा, मालिक अपने गुलाम को बेच सकता था. वो ऐसा अक्सर बिना किसी विचार के करता था, माँ को बच्चे से अलग कर देता था, पति और पत्नी, बहन और भाई को अलग कर देता था. बेचारे नीग्रो पूरी तरह से असहाय थे, उन्हें दिन भर तपती धूप में काम करना पड़ता था, उन्हें बहुत घटिया खाना मिलता था, वे दयनीय झोपड़ियों में रहते थे, जो अमीर आदमी के घर से एक विशाल नदी द्वारा अलग थीं. यहाँ नीग्रो रहते थे, एक-साथ विशाल भीड़ में; बच्चे इन झोपड़ियों के सामने खेलते थे, खुशी से खेलते थे, क्योंकि उन्हें अभी तक पता नहीं था कि वे गुलाम थे और एक कठिन, मुश्किल जीवन उनका इंतजार कर रहा था.

नीग्रो की एक झोपड़ी में छोटा भूरा कुत्ता आया जो शानदार अस्तबल में पैदा हुआ था, और यह सब इस तरह से हुआ.

एक बार जब अमीर आदमी अस्तबल से गुजर रहा था, तो उसने छोटे भूरे कुत्ते को देखा जो भूसे में खेल रहा था. उसने छोटे कुत्ते की जांच की और कोचवान से गुस्से में कहा, "यह बदसूरत छोटा जीव मेरे सुंदर अस्तबल में क्या कर रहा है? इसे बाहर निकालो, और नदी में डुबो दो."
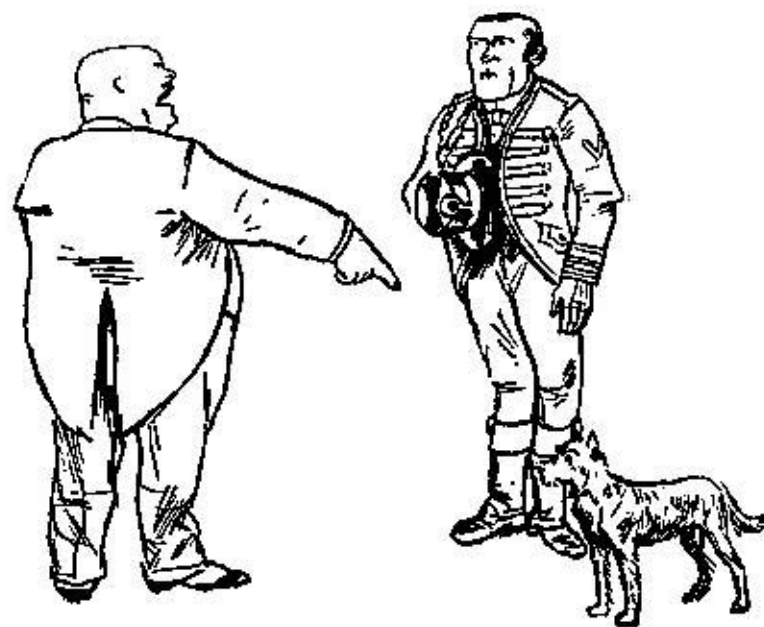
कोचवान ने ऐसा करने का वादा किया. वास्तव में उसे इस जीवंत छोटे जानवर पर दया आ रही थी, लेकिन मालिक सख्त था और उसने आदेश की अवहेलना करने की हिम्मत नहीं की. उसने छोटे कुत्ते को बुलाया, जो खुशी से दौड़ता हुआ आया और फिर वे दोनों नदी की ओर चल पड़े. जैसे ही वह दासों के घरों के पास पहुंचा, एक छोटा काला लड़का एक झोपड़ी से बाहर निकला और चिल्लाया, "ओ, प्यारे इंसान! तुम इसे कहाँ ले जा रहे हो?" और वह उनके काफी करीब भागा और उसने कुत्ते को थपथपाया, जो शरारती ढंग से उस पर कूदा और भौंकने लगा.

"मुझे इस कुत्ते को डुबोना है," कोचवान ने उत्तर दिया.

इस पर छोटे लड़के की आँखों में आँसू भर आए, उसने कुत्ते को अपनी बाहों में लिया, उसे अपने पास रखा और विनती की, "ऐसा मत करो. देखो कि वह कितना प्यारा है!"

"मुझे वो करना ही होगा, बेंजामिन, क्योंकि उसके मालिक ने मुझे आदेश दिया है. अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगा, तो वह मुझे कड़ी सजा देगा."

छोटे भूरे कुत्ते ने बेंजामिन के चेहरे को चाटा, अपनी बड़ी आँखों से उसे देखा जो उससे विनती कर रही थीं, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!"

"मुझे कुत्ता दे दो," बेंजामिन ने विनती की. "मैं उसे अच्छी तरह से छिपा दूँगा ताकि मालिक उसे देख नहीं सके."

कोचमैन ने एक पल सोचा, फिर जवाब दिया, "अच्छा, तुम उसे छिपा सकते हो. लेकिन," उसने चेतावनी देते हुए कहा, "तुम यह नहीं बताना कि मैंने उसे तुम्हें दिया है. अगर मालिक उसे कभी देख ले, तो तुम कहना होगा कि तुमने उसे नदी से बचाया था. फिर वह तुम्हें बुरी तरह पीटेगा. ..."

"उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा," बेंजामिन ने उत्सुकता से कहा. "तब तक छोटा कुत्ता ज़िंदा तो रहेगा."

कोचवान ने हंसते हुए कुत्ते की गर्दन से रस्सी हटाई और बेंजामिन उसके साथ झोपड़ी की ओर भागा, उसे चूमा, खुशी से चूमा और थपथपाया. शाम को जब बेंजामिन के माता-पिता घर आए, तो उसने उन्हें वो कुत्ता दिखाया और माता-पिता भी खुश हुए क्योंकि उन्हें पूरे दिन घर से बाहर रहना पड़ता था और उन्हें हमेशा डर लगा रहता था कि कहीं उनका छोटा लड़का नदी में जाकर डूब न जाए. लेकिन अब लड़का अपने कुत्ते के साथ झोपड़ी के पास ही रहेगा, ताकि अमीर आदमी के गुजरने की स्थिति में वह जल्दी से उसे छिपा सके.

ऐसा लग रहा था जैसे छोटा भूरा कुत्ता जानता था कि बेंजामिन ने उसकी जान बचाई थी. उसने छोटे लड़के का साथ नहीं छोड़ा, उसकी बात मानी और खुद को काफी बुद्धिमान साबित किया. बेंजामिन ने उससे एक इंसान की तरह बात की और कुत्ते ने उसे इतनी समझदारी से देखा जैसे वह उसका हर शब्द समझ रहा हो.

बेंजामिन के माता-पिता युवा और मजबूत थे. वे गन्ने के बागानों में सबसे अच्छे मजदूर थे. इसलिए, सख्त ओवरसियर उनसे संतुष्ट था और उन्हें अन्य दासों की तुलना में कम पीटता था. इस कारण वे दोनों, अपने कठिन जीवन के बावजूद, संतुष्ट थे और शाम को जब वे अपनी झोपड़ी और अपने छोटे बेंजामिन के पास लौटते, तो वे तीनों खुश और प्रसन्न होते थे.

बेंजामिन की माँ हन्ना भी एक बेहतरीन दर्जिन थी, वह नरकट और सरस से सुंदर टोकरियाँ बुनना जानती थी और वो एक बहुत अच्छी रसोइया भी थी.

एक दिन अमीर आदमी की सबसे बड़ी बेटी, जो अपने पति के साथ उत्तर में रहती थी, अपने पिता से मिलने आई. वह अपने पुराने घर को फिर से देखकर खुश हुई और वहाँ पर उसे सब कुछ उत्तर की तुलना में अधिक सुंदर लगा. उसने शिकायत की कि उसे शहर में नौकर मिलने में परेशानी हो रही थी. "ये गोरे, अश्वेतों की तरह अच्छा काम नहीं करते हैं," उसने कहा. "उन्हें चाबुक से काम पर नहीं लगाया जा सकता. पिताजी, आप मुझे एक अच्छा गुलाम दें, ताकि मेरे लिए यह जीवन अधिक आरामदायक बने. मेरे पति इस बात से बहुत नाराज़ होंगे, क्योंकि उत्तर के लोग अपने पागलपन में यह दावा करते हैं कि अश्वेत भी इंसान हैं, और गुलामी को समाप्त कर दिया जाना चाहिए. लेकिन वह मुझसे बहुत प्यार करते हैं, और अगर वे मुझे खुश देखेंगे तो वे खुद भी खुश होंगे."

अमीर आदमी ने कुछ देर सोचा और कहा, "मेरे पास जो युवा गुलाम हैं वे सभी अनाड़ी और अक्षम हैं; बूढ़े निश्चित रूप से बड़े शहर में रहने के आदी नहीं होंगे और वो तुम्हारी मदद करने के बजाय अधिक परेशानी पैदा करेंगे. बताओ मैं तुम्हें कौन सा गुलाम दे सकता हूँ?"

अमीर आदमी ने एक पल के लिए सोचा, फिर वो खुशी से चिल्लाया, "अब मुझे पता है, हन्ना तुम्हारे लिए बिल्कुल सही होगी. मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ? बेशक, उसका एक छोटा लड़का है.. ."

"मुझे वह नहीं चाहिए," बेटी ने बीच में टोका. "मेरे प्यारे छोटे बेटे को गंदे नीग्रो बच्चे के साथ नहीं खेलना चाहिए. आप हन्ना के बेटे को यहीं रख सकते हैं."

"तुम एक अच्छी माँ हो, मेरी प्यारी बेटी," अमीर आदमी ने भावुक होकर कहा. "तुम हमेशा अपने बेटे के बारे में सोचती हो. ठीक है, बेंजामिन यहीं रहेगा और जब तुम कल शहर वापस जाओगी, तो मैं तुम्हें हन्ना को साथ ले जाने के लिए दूँगा. मैं अभी ओवरसियर को बता देता हूँ, ताकि वह उसे तैयार रहने के लिए कहे."

और अमीर आदमी ने एक नौकर को बुलाया और उससे ओवरसियर को बुलाने को कहा.

आह, नीग्रो की छोटी सी झोपड़ी में वह कितनी दुखद रात थी. बेचारी हन्ना ने अपने छोटे बेटे को अपनी बाहों में भर लिया और रो पड़ी मानो उसका दिल टूट गया हो. उसका पति टॉम चिंतित आँखों से उसे देख रहा था और वो इतना दुखी था कि वह एक शब्द भी नहीं बोल सका. हन्ना बेचैनी से छोटी सी खिड़की की ओर देखती रही. वो सुबह की पहली किरण को देखने के डर से काँप रही थी जिसका मतलब था कि वह दिन करीब था, जब उसे अपने प्रियजनों से बिछुड़ना पड़ेगा.

छोटा भूरा कुत्ता अपने दोस्तों के दुख को समझता हुआ प्रतीत हुआ. वह हन्ना के काफी करीब आकर बैठ गया, और उसे प्यार भरी, चतुर आँखों से देखता रहा. फिर हन्ना जोर से चिल्लाई, "अगर वे तुम्हें भी बेच देते हैं, टॉम, तो हमारे बेचारे बच्चे का क्या होगा? छोटे कुत्ते ने छोटे बेंजामिन पर अपना पंजा रखा जैसे कह रहा हो, "डरो मत, बेचारी माँ, मैं उसका ख्याल रखूँगा."

हन्ना ने जब यह देखा, तो रोते हुए कुत्ते के झबरे सिर को थपथपाया, और उससे कहा, "मेरे छोटे लड़के की रक्षा करो, तुम एक अच्छे कुत्ते हो. हम सभी तुम्हारी तरह ही असहाय और परित्यक्त हैं."

अगली सुबह, बेचारी हन्ना फूट-फूट कर रोती हुई, अमीर युवती के साथ चली गई. उसके परिवार को उसे विदाई देने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि टॉम को खेत में काम करना था और बेंजामिन को, सभी दासों की तरह, अमीर आदमी के घर के पास आने की मनाही थी.

छोटे बेंजामिन ने कई दुखद दिन गुजारे. उसके पिता इतने दुखी थे कि अब वे काम करना नहीं चाहते थे, और कई शामें वे अपनी पीठ पर खून से लथपथ होकर घर लौटते थे. बेंजामिन जिस दुलार और खुशी का आदी था उसके बजाय अब घर में एक अजीब सी खामोशी थी. टॉम उदास होकर जमीन पर बैठा था, कभी-कभी अपने छोटे बेटे के सिर को उदास होकर सहलाता था, लेकिन कभी कुछ नहीं बोलता था. कभी-कभी वह चिल्लाता था, "हन्ना!" और गहरी साँस लेता था, जबकि उसके काले चेहरे से बड़े-बड़े आँसू बहते थे. और कभी-कभी वह अपनी मुट्ठी भींच लेता था, इतना क्रोधित दिखता था कि बेंजामिन छोटे कुत्ते को लेकर उसके साथ एक कोने में चला जाता था.

ओवरसियर हमेशा टॉम से असंतुष्ट रहता था; वह मालिक से दास के आलस्य और हठ की शिकायत करता था. अगर बेचारे टॉम को अपनी अवज्ञा के परिणामों के बारे में पता होता, तो वह अपने क्रोध और नाखुशी के बावजूद पहले की तरह ही मेहनत से काम करता.

अमीर आदमी ने अपना जन्मदिन मनाया. वहाँ एक शानदार दावत थी, मुर्गियाँ, बछड़े और मेमनों को भूना गया था, पूरे घर में स्वादिष्ट भोजन की खुशबू फैली हुई थी, नौकर शराब के तहखाने से अनगिनत बोतलें लेकर आए. रात के खाने के बाद युवा मेहमानों ने बड़े हॉल में नृत्य किया, बूढ़े लोग एक मेज पर बैठकर ताश खेलने लगे.

धनी व्यक्ति की तकदीर खराब थी, वह बार-बार हारता रहा, जब तक कि आखिरकार उसका पर्स खाली नहीं हो गया. "एक और खेल," उसने अपने दोस्त से कहा जिसने उसका सारा पैसा जीत लिया था. "हम अब मेरे सबसे मजबूत और सबसे अच्छे गुलाम के लिए जुआ खेलेंगे." और उसने खुद से सोचा, "अगर मैं टॉम को हार भी जाता हूं, तो उसमें कोई दुर्भाग्य नहीं होगा, क्योंकि वह वैसे भी आलसी और जिद्दी है."

उसका दोस्त सहमत हो गया. एक इंसान का पूरा जीवन और भाग्य कुछ कार्ड, कागज के एक बंडल पर निर्भर करता था. अमीर आदमी ने एक कार्ड निकाला; उसके दोस्त ने भी ऐसा ही किया. उन्होंने कार्ड टेबल पर फेंक दिए. अमीर आदमी बाजी हार गया.

जब अगली सुबह टॉम काम पर आया, तो ओवरसियर ने उसे अमीर आदमी के घर जाने के लिए कहा, मालिक ने उसे बेच दिया था और उसका नया मालिक उसे तुरंत अपने खेत पर ले जाएगा.

उस शाम बेंजामिन ने अपने पिता की वापसी के लिए व्यर्थ इंतजार किया. रात हो गई, काफी अंधेरा हो गया, और उसके पिता नहीं आए. बेंजामिन दहलीज पर बैठा था, उत्सुकता से अंधेरे में झांक रहा था. छोटा भूरा कुत्ता उसके पास लेटा था. वह उदास और शांत था; उसे भी कुछ गड़बड़ लग रही थी. आखिरकार बेंजामिन अपने हाल को बर्दाश्त नहीं कर सका, और वो रोता हुआ एक पड़ोसी की झोपड़ी में गया और उसने अपने पिता के बारे में पूछा. मोटी अश्वेत महिला ने उसे बताया कि एक अजीब मालिक उस सुबह टॉम को अपने साथ ले गया था; उसे बेच दिया गया था और वह अब वापस नहीं आएगा.

बेंजामिन अंधेरे से डरते हुए रोते हुए घर पहुँच, अपने एकमात्र दोस्त छोटे कुत्ते को अपनी बाहों में कसकर पकड़े हुए. और अब कुछ अजीब हुआ. जब बेंजामिन ने रोते हुए छोटे कुत्ते को इस दुःख के बारे में बताना शुरू किया, तो कुत्ता धीरे से बोलने लगा. लेकिन यह कोई साधारण भौंकना नहीं था, बल्कि भाषण था, और बेंजामिन ने शब्दों को अच्छी तरह से समझा, "मत रोओ, छोटे दोस्त, मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा और तुम्हारी रक्षा करूंगा. और किसी दिन हम तुम्हारे माता-पिता की तलाश में जाएंगे."

बेंजामिन इस पर इतना हैरान हुआ कि उसने रोना बंद कर दिया. "क्या!" वह आश्चर्यचकित होकर चिल्लाया, "तुम एक इंसान की तरह बोल सकते हो?"

कुत्ते ने अपना झबरा सिर हिलाया. "हाँ, जब अमीर लोग गरीब लोगों के साथ जंगली जानवरों की तरह व्यवहार करते हैं, तो हमें जानवरों को उनकी मदद करनी चाहिए. जब कोई इंसान बहुत दुखी और परित्यक्त होता है, तो वह हमारी भाषा समझता है और जानता है कि हम उसका भला चाहते हैं. मैं नहीं भूला हूँ, छोटे बेंजामिन, कि तुमने मेरी जान बचाई. मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ. भूसे पर लेट जाओ, सो जाओ, मैं तुम्हारा ख्याल रखूँगा."

छोटे लड़के ने कुत्ते की आज्ञा मानी, और कुत्ता उसके पास बैठ गया, सारी रात उसकी रखवाली करता रहा, कभी-कभी वो अपनी गर्म जीभ से बेंजामिन का हाथ चाटता था.

फिर छोटे बेंजामिन के लिए कठिन समय आया. उसकी पड़ोसन मोटी महिला उसे अपनी झोपड़ी में ले गई, लेकिन उसने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया. उसने उसे एक भारी बाल्टी में नदी से पानी लाने के लिए मजबूर किया, और उससे हर तरह के कठिन काम करवाए. और सबसे बुरा अभी आना बाकी था. एक दिन अमीर आदमी, नीग्रो की झोपड़ियों के पास से गुजरा और उसने बेंजामिन को देखा. "एक मजबूत लड़का," उसने कहा. "वह पहले से ही खेतों में काम करना चाहिए था." और तब से छोटे लड़के को धूप की तपिश में खेतों में काम करना पड़ा जब तक कि उसे लगा कि वह थक कर मर जाएगा.

शाम को थक कर वह झोपड़ी में घुस जाता, अपना सिर भूरे कुत्ते की खाल में छिपा लेता, रोता और अपने एकमात्र दोस्त से सांत्वना लेता.

एक शाम, उसकी पीठ खून से लथपथ और चेहरा सूजा हुआ था, बेंजामिन घर आया. ओवरसियर बहुत गुस्से में था, उसने छोटे लड़के को चाबुक से पीटा और उसके चेहरे पर मुक्का मारा था.

"मैं मरना चाहता हूँ," बेंजामिन चिल्लाया, जबकि कुत्ता धीरे से और धीरे से उसके घावों को चाट रहा था. "मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता. मेरे माता-पिता चले गए हैं, मैं पूरी तरह से अकेला हूँ, हर कोई मेरे साथ निर्दयी है. कुत्ते, प्यारे कुत्ते, मैं क्या करूँ?"

"भाग जाओ," कुत्ते ने जवाब दिया.

"कहाँ जाऊँ? वे मुझे पकड़ लेंगे और फिर से पीटेंगे."

कुत्ते ने कुछ देर तक गहराई से सोचा.

आखिरकार कुत्ते ने कहा, हमें उत्तर की ओर जाना चाहिए. वहाँ के लोग यहाँ से बेहतर हैं. वे नहीं चाहते कि नीग्रो गुलाम बनें. हमें वहाँ से भाग जाना चाहिए."

"मुझे रास्ता नहीं पता," बेंजामिन ने शिकायत की.

"मैं तुम्हें ले चलूँगा. सुबह और रात, जब सब सो जाएँगे, हम चलेंगे."
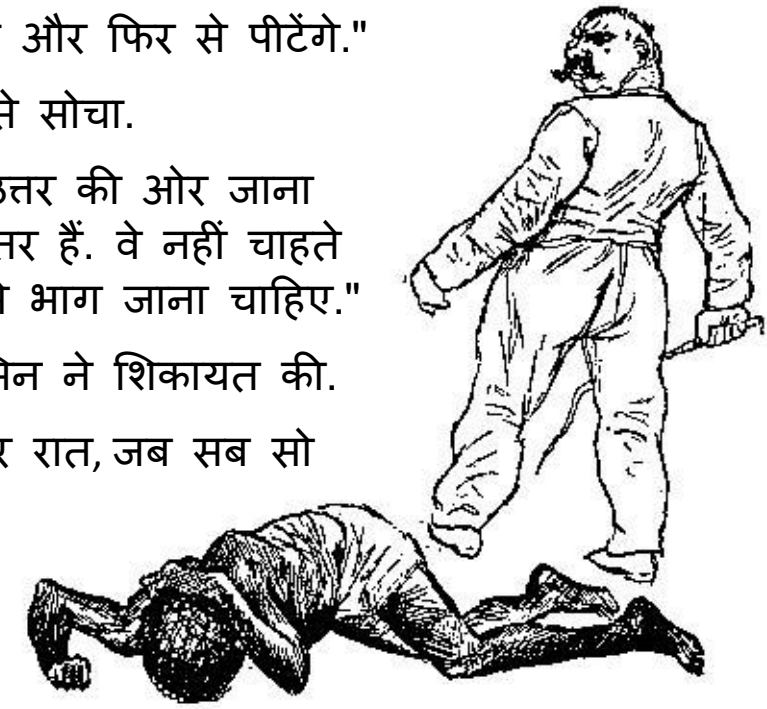
और ऐसा ही हुआ. चाँद आसमान में एक छोटी सफ़ेद दरांती की तरह था, बड़े पेड़ धरती पर अजीब, काली परछाइयाँ बिखेर रहे थे, सब कुछ मौत जैसा शांत था, बस कभी-कभी पत्तियाँ नींद में सरसराहट करती थीं. बेंजामिन और कुत्ता धीरे-धीरे अपने पंजों के बल पर झोपड़ी से बाहर भागे, और बड़ी नदी की ओर गए. पूरी रात वे नदी के किनारे भटकते रहे, और जब सुबह हुई तो कुत्ते ने एक सुरक्षित छिपने की जगह की तलाश की, क्योंकि छोटे बेंजामिन के छोटे पैर उसे बहुत दूर तक नहीं ले जा पाए थे, और अभी भी खतरा था कि अमीर आदमी के नौकर उसका पता लगा सकते हैं.

जब कुत्ता सुरक्षित जगह की तलाश में बेचैनी से इधर-उधर भाग रहा था, बेंजामिन नदी के किनारे बैठ गया, अपने थके हुए, जलते हुए पैरों को पानी में लटकाए रखा. अचानक वह बुरी तरह डर गया और जल्दी से अपने पैरों को पीछे खींच लिया. एक बड़ा नुकीला सिर पानी में घुसा, एक विशाल मुँह खुला, जिसमें भयानक दाँतों की दो पंक्तियाँ दिख रही थीं, और एक गहरी आवाज़ में गरजना हुई, "एक बढ़िया निवाला, बस नाश्ते के लिए सही है."

बेंजामिन जोर से चिल्लाया और कुत्ता तेजी से उसके पास दौड़ा. हालाँकि वह खुद थोड़ा डरा हुआ था, उसने बेंजामिन से फुसफुसाते हुए कहा, "यह एक मगरमच्छ है. पीछे हटो और मुझे उससे बात करने दो."

छोटे लड़के ने आज्ञा का पालन किया और कुत्ते ने मगरमच्छ से विनम्रतापूर्वक कहा, "नदी के शक्तिशाली स्वामी, आपके राज्य में आने के लिए हमें क्षमा करें, लेकिन हम बुरे लोगों से भाग रहे हैं और जानते हैं कि आप अपनी शक्ति से हमारी रक्षा करने के लिए पर्याप्त होंगे."

मगरमच्छ ने खुद को खुश महसूस किया, अपने विशाल मुंह को एक दोस्ताना मुस्कान में खींचा और विनम्रता से उत्तर दिया, "तुम एक चतुर जानवर हो. मैं वास्तव में लोगों से अधिक शक्तिशाली हूं, और," उसने सोच-समझकर सहमति जताई, "हम भी उनके जैसे बुरे नहीं हैं. लेकिन यह प्राणी जो पानी में अपने पैर लटकाए बैठा है, वह भी एक इंसान है. फिर वह अपने ही भाइयों से क्यों भाग रहा है?" और मगरमच्छ की चमकदार, हरी आंखों ने कुत्ते को अविश्वास से देखा.

"तुम निश्चित रूप से जानते हो, बुद्धिमान और शक्तिशाली जानवर, कि अमीर लोग गरीबों के प्रति निर्दयी होते हैं, जैसे कि वे सबसे जंगली जानवर हों. ऐसा इसलिए है क्योंकि आदमी से ज़्यादा लालची कोई और जानवर नहीं है. वह कभी संतुष्ट नहीं होता, वह हमेशा और चाहता है; खाना-पीना और घर, लेकिन सबसे बढ़कर, सोना. यही बात उसे इतना नीच बनाती है. मेरा छोटा दोस्त एक गरीब बच्चा है जो एक अमीर आदमी के लिए काम करने के लिए मजबूर है. उसे उसके माता-पिता से अलग कर दिया गया, और तब तक पीटा गया जब तक कि खून बहने न लगा. मैंने उसे भागने की सलाह दी. और अब हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमारी मदद करें, क्योंकि किसी भी क्षण अमीर आदमी के नौकर आ सकते हैं और मेरे छोटे दोस्त को पकड़ सकते हैं,"

मगरमच्छ ने सोच-समझकर अपना नुकीला सिर हिलाया और कहा: "मनुष्य अजीबोगरीब प्राणी हैं. कोई भी मगरमच्छ एक छोटे मगरमच्छ को नहीं सताएगा, न ही हम अमीर और गरीब के बीच का अंतर जानते हैं, और फिर भी यह कहा जाता है कि हम बुरे जानवर हैं. यह सच है कि मैं तुम्हारे छोटे दोस्त को नाश्ते में खाना चाहूँगा, फिर भी मैं उस पर दया करूँगा. मैं तुम्हें एक सुरक्षित छिपने की जगह भी दिखाऊँगा. क्या तुम उस छोटे दोस्त को देख रहे हो? द्वीप? अमीर आदमी के नौकर तुम्हें वहाँ नहीं खोज पाएँगे."

"हम तुम्हारा शुक्रिया अदा करते हैं, ताकतवर जानवर; लेकिन हम द्वीप तक कैसे पहुँच सकते हैं? पानी उबड़-खाबड़ और गहरा है, और मेरा छोटा दोस्त तैर नहीं सकता."

"मैं तुम्हें अपनी पीठ पर उठाकर ले जाऊँगा," मगरमच्छ ने जवाब दिया.

बेंजामिन और कुत्ता जानवर की पपड़ीदार पीठ पर बैठ गए, और वह तैरने लगा. यह कैसी अजीब यात्रा थी! लहरें मगरमच्छ की पीठ पर खेल रही थीं और कुत्ते को डर था कि मगरमच्छ अपना मन बदल सकता था और नाश्ते में उन दोनों को खा सकता था . इस कारण से, उसने मगरमच्छ से लगातार बात की, उसकी चापलूसी की, उसकी अच्छाई की प्रशंसा की और गंभीरता से घोषणा की कि मगरमच्छ दुनिया के सबसे अच्छे जानवर हैं. यह चाल अपने उद्देश्य में विफल नहीं हुई. जब वे द्वीप पर उतरे, तो मगरमच्छ ने बारह सबसे मजबूत मगरमच्छों को अपने पास बुलाया, और उन्हें निर्देश दिया कि वे लड़के या कुत्ते को एक बाल भी नुकसान न पहुँचाएँ, क्योंकि वे उसके मेहमान थे.

उसने उन्हें नदी के किनारे तैरकर पहरा देने का आदेश दिया, ताकि लोग द्वीप पर न आ सकें. यह अच्छी तरह से किया गया, क्योंकि जब सूरज आसमान में ऊँचा था, तो पाँच आदमी दिखाई दिए, जिन्हें अमीर आदमी ने बेंजामिन की तलाश में भेजा था.

एक ने द्वीप की ओर इशारा किया, पानी में जाने लगा, तभी एक विशाल मगरमच्छ ने उसका सिर पानी से बाहर धकेल दिया और वह आदमी पीछे हट गया. "वह वहाँ नहीं हो सकता," आदमी ने अपने साथियों से कहा. "यहाँ के मगरमच्छों ने उसे खा लिया होगा."

बेंजामिन और कुत्ते ने पूरे दिन द्वीप पर आराम किया. छोटे लड़के ने वहाँ उगने वाले मीठे जामुन खाए, एक कुएँ से पानी पिया, और शाम को मगरमच्छ उन्हें फिर से किनारे पर ले गया और उन्हें दोस्ताना विदाई दी.

आज की यात्रा कल की तुलना में अधिक कठिन थी, क्योंकि बेंजामिन के पैरों में छाले पड़ गए थे, वह हर कदम पर कराह रहा था और शिकायत कर रहा था. कुत्ते ने उसे दिलासा दी, उसका हौसला बढ़ाया, उसे थोड़ी देर अपनी पीठ पर सवारी करने दी, हालांकि लड़का बहुत भारी था और कुछ ही मिनटों के बाद कुत्ते की हड्डियां टूट जाएंगी और उसे लेटना पड़ेगा.

कुत्ते को बहुत दुःख हुआ, निश्चित रूप से अमीर आदमी के नौकर पड़ोस में ही कहीं होंगे, जो लड़के के बिना घर वापस नहीं लौटेंगे. और अगर वे नहीं भी मिले, तो उत्तर कितनी दूर है? अगर बेंजामिन पहले से ही इतना थक गया है कि आगे नहीं जा सकता, तो हम वहाँ कैसे पहुँचेंगे?

आधी रात के करीब उन्होंने अचानक घास के मैदान में आग जलती देखी. वहाँ ज़रूर लोग होंगे. कुत्ते ने लड़के को घसीटकर एक घनी झाड़ी में ले गया, उसे शांत रहने को कहा, और धीरे से आग की ओर बढ़ा. आग पर एक बर्तन लटका हुआ था, और उसके सामने एक गोरा आदमी बैठा था. पास ही बड़े पहियों वाली एक गाड़ी खड़ी थी, जिस पर एक भूरे रंग का घोड़ा बंधा हुआ था. कुत्ते ने उस आदमी को बहुत खोजी निगाहों से देखा. वह घर के लोगों से अलग दिख रहा था, उसकी त्वचा बहुत गोरी थी, नीली आँखें दयालु थीं; निश्चित रूप से, वह उत्तर का रहने वाला था. लेकिन क्या वह एक अच्छा आदमी था? तब कुत्ते को याद आया कि केवल बहुत अच्छे लोग ही जानवरों की भाषा समझते हैं, और कुत्ते ने उसे छोटे बेंजामिन की कहानी सुनाने का फैसला किया. सावधानी से वह आग के पास आया और धीरे से बोला, "गुड इवनिंग, मित्र. क्या तुम उत्तरी हो?"

आदमी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा, लेकिन, ओह खुशी, उसने शब्दों को समझ लिया था और उत्तर दिया, "गुड इवनिंग, मेरे दोस्त. हाँ, मैं उत्तरी हूँ. क्या तुम कुछ खाना चाहते हो? मेरा खाना जल्द ही तैयार हो जाएगा."

"मुझे भूख नहीं है," कुत्ते ने उत्तर दिया. "लेकिन मुझे कुछ मदद चाहिए." और फिर उसने छोटे बेंजामिन की कहानी सुनाई.

गोरा आदमी गुस्से से लाल हो गया और उसकी आँखें चमक उठीं. इससे कुत्ता खुश हो गया. "वह वास्तव में एक अच्छा आदमी था," उसने सोचा, "क्योंकि केवल अच्छे लोग ही दूसरों के दुख सुनकर नाराज़ होते हैं." जब वह बोलना समाप्त कर चुका, तो आदमी ने कहा, "अपने छोटे दोस्त को जल्दी से यहाँ ले आओ. मेरा घोड़ा पर्याप्त आराम कर चुका है. हम यहाँ से तुरंत चले जाएँगे ताकि कोई बेंजामिन को पकड़ न सके."

छोटा भूरा कुत्ता कितना खुश था! अपनी थकान के बावजूद, वह खुशी से नाचता हुआ, अपनी दुम हिलाता हुआ, झाड़ियों की ओर चल पड़ा, जहाँ बेंजामिन छिपा हुआ था. तभी उसने कुछ भयानक देखा. एक आदमी घास के मैदान से एक कुत्ते के साथ आया, जो सीधे झाड़ियों की ओर भागा. भूरा कुत्ता डर के मारे चिल्लाया. गोरे आदमी ने ऊपर देखा, आगे बढ़ा और कुत्ते को पुकारा, "आदमी को बस एक पल के लिए रोक लो, और फिर सब ठीक हो जाएगा." इस पर कुत्ता आदमी की ओर भागा. आदमी झाड़ी तक पहुँच गया था, कुत्ते ने एक ही झटके में उसका गला पकड़ लिया, उसे जोर से काटा, काटने और घूँसने के बावजूद अपनी पकड़ ढीली नहीं की.

इस बीच, उत्तरी आदमी ने छोटे बेंजामिन को अपनी बाहों में ले लिया, जल्दी से गाड़ी की ओर भागा, उसमें कूद गया, और कुत्ते को पुकारा, "हमारे पीछे आओ, हम सुरक्षित जगह पर तुम्हारा इंतज़ार करेंगे."

फिर उसने अपना चाबुक फटकारा, सड़क पर चल पड़ा, भूरा घोड़ा आगे सरपट दौड़ा क्योंकि उसे सब कुछ पता था कि क्या हो रहा है. भूरे रंग का कुत्ता अभी भी आदमी का गला पकड़े हुए था, हर पल यह सोच रहा था कि अगर वह आदमी को रोक पाया, तो यह अच्छे आदमी और छोटे लड़के के लिए फायदेमंद होगा, और वो उसके दोस्त को बचा लेगा. लेकिन उस थके हुए आदमी ने अपनी जेब से एक बड़ा चाकू निकाला और उसे वफादार कुत्ते की छाती में घोंप दिया. कुत्ता दयनीय रूप से रोया और भारी होकर जमीन पर गिर पड़ा. उसकी धुंधली आँखों ने अभी भी दूर, एक छोटा सा स्थान देखा जो छोटा और छोटा होता जा रहा था. यह वह गाड़ी थी जो छोटे बेंजामिन को आज़ादी की ओर ले जा रही थी.

कुत्ते के दिल में बहुत खुशी भर गई. उसने एक बार फिर अपनी घनी दुम हिलाई. फिर वह मर गया.

गोरा आदमी और छोटे बेंजामिन ने भूरे कुत्ते का बहुत देर तक व्यर्थ इंतज़ार किया. बेंजामिन फूट-फूट कर रोया, और उसके नए दोस्त ने उसे दिलासा दी: "बहादुर कुत्ता वापस दौड़कर आएगा. उसके साथ सब ठीक होगा."

हालाँकि बेंजामिन सुरक्षित था, लेकिन जब भी वह अपने दोस्त के बारे में सोचता तो हमेशा दुखी होता था. लेकिन वह नहीं जानता था कि छोटा भूरा कुत्ता उसके लिए मर गया था, बेंजामिन के प्रति कृतज्ञता का कर्ज अपनी जान देकर चुका रहा था.

क्यों?

"मुझे कभी अंडा क्यों नहीं मिला," पॉल ने पूछा

एक बार की बात है, एक छोटा लड़का था, जिसके न तो पिता थे और न ही माँ, जो एक छोटे से गाँव में एक गरीबखाने में रहता था. वह पूरे गरीबखाने में अकेला बच्चा था; बाकी सभी बूढ़े लोग थे जो हमेशा उदास और चिड़चिड़े रहते थे, जो धूप में चुपचाप बैठना पसंद करते थे, और जब भी छोटा लड़का खेलते समय उनसे टकराता या बहुत ज़्यादा शोर मचाता तो वे नाराज़ होते थे.

छोटे पॉल के लिए यह एक दुखद जीवन था. उसने कभी कोई दयालु शब्द नहीं सुना, कोई भी उससे प्यार नहीं करता था, और जब भी वह दुखी होता था तो कोई भी उसे दुलारता या सांत्वना नहीं देता था. इसके बजाय उसे हर दिन डांटा जाता था और अक्सर उसे पीटा भी जाता था. उसकी एक ख़ासियत ने गरीबखाने के लोगों को विशेष रूप से परेशान किया: हर अवसर पर वह पूछता था, "क्यों?" वो हमेशा हर चीज़ का कारण जानना चाहता था.

"तुम्हें हमेशा क्यों नहीं पूछना चाहिए," गरीबखाने की प्रभारी मोटी मेट्रन ने गुस्से में घोषणा की. "सब कुछ वैसा ही है जैसा होना चाहिए, और इसलिए वह सही है."

"लेकिन मेरे पास गाँव के दूसरे बच्चों की तरह माता-पिता क्यों नहीं हैं?" छोटे पॉल ने जोर देकर कहा.

"क्योंकि वे मर चुके हैं."

"वे क्यों मर गए?"

"क्योंकि भगवान ने ऐसा चाहा."

"भगवान ने ऐसा क्यों चाहा?"

"चुप रहो, निकम्मे! मुझे अपने शाश्वत सवालों से बख्शो." मोटी औरत गुस्से से लाल हो गई, क्योंकि वह पॉल के सवालों का कोई जवाब नहीं जानती थी, और अज्ञानी लोगों को तब सबसे ज़्यादा गुस्सा आता है जब उन्हें मजबूर होकर यह कहना पड़े, "मुझे नहीं पता."

लेकिन कोई भी छोटे पॉल को चुप नहीं रख पाया. उसने गुस्से से लाल चेहरे की तरफ़ देखा और आगे पूछा, "तुम मेरे साथ इतने अधीर क्यों हो जाते हो?"

थप्पड़! और फिर उसके कानों पर एक मुक्का मारा गया. वह रोने लगा, चिल्लाने लगा, और भागते हुए पूछा, "तुम मुझे क्यों मार रहे हो?"

फिर वह मुर्गी के बाड़े में गया. वहाँ कई रंग-बिरंगे पंखों वाली एक बड़ी मुर्गी खड़ी थी, जो गर्व से चिल्लाते हुए कह रही थी, "मैंने अंडा दिया है! मैंने अंडा दिया है!" और आँगन में चारों ओर एक स्वर में आवाज़ आ रही थी: "मैंने अंडा दिया है! मैंने अंडा दिया है!" लेकिन मुर्गा क्रोधित था क्योंकि मुर्गियाँ इस बात पर बहुत गर्वित थीं कि उन्होंने कुछ ऐसा किया है जो वह नहीं कर सकता था, और वह तिरस्कारपूर्वक चिल्लाया, "मैं मुर्गा हूँ, तुम सिर्फ़ मुर्गियाँ हो!" तभी वहाँ से गरीबखाने की छोटी गोरी नौकरानी मैरी आई, उसने सावधानी से अंडों को अपने नीले एप्रन में इकट्ठा किया, और उन्हें घर में ले गई.

"तुम्हारे सारे अंडे कहाँ जाते हैं?" पॉल ने धब्बेदार मुर्गी से पूछा.

"शहर में," वह चिल्लाई.

"वहाँ कौन उन्हें खाता है?"

"अमीर लोग, अमीर लोग," मुर्गी ने गर्व से कहा, मानो यह उसके लिए कोई विशेष सम्मान हो.

"मेरे पास कभी अंडा क्यों नहीं होता?" पॉल ने शिकायत की, "मैं हमेशा बहुत भूखा रहता हूँ, तुम जानती हो."

"क्योंकि तुम एक गरीब लड़के हो." और मुर्गी ने गरिमा के साथ अपने पंख फैलाए, और अपनी टेढ़ी चोंच के ऊपर से पॉल को चुनौती देते हुए देखा.

"लेकिन मैं एक गरीब लड़का क्यों हूँ?"

अब मुर्गी, मोटी मेट्रन की तरह क्रोधित हो गई, और भड़क उठी: "चले जाओ! तुम मुझे अपने सवालों से थका रहे हो."

निराश होकर पॉल चुपचाप खिसक गया. बगीचे का दरवाज़ा खुला था, और वह सड़क पर निकल गया, बिना किसी उद्देश्य के टहलता हुआ जब तक कि वह एक गौशाला के प्रवेश द्वार पर नहीं पहुँच गया. वह गौशाला एक अमीर किसान की थी.

कई चिकनी गायें, सफ़ेद और लाल भूरे रंग की, एक पंक्ति में खड़ी थीं और बड़ी, कोमल आँखों से अपने सामने देख रही थीं. पॉल को बहुत भूख लगी थी, वह सबसे दोस्ताना तरीके से आगे बढ़ा. गाय को देखकर, उसने विनती की, "प्यारी गाय, क्या तुम मुझे अपना कुछ दूध पिलाओगी?"

"मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकती," गाय ने उत्तर दिया. "देखो, दूध किसान का है."

छोटे लड़के ने आश्चर्य से गाय को देखा, फिर पूरे शेड में, धीरे-धीरे जानवरों की गिनती करते हुए: "एक, दो, तीन." बारह तक पहुँचने पर वह रुक गया, क्योंकि हालाँकि वहाँ बहुत सारी गायें थीं, लेकिन वह रुक गया क्योंकि गिनती करना उसके लिए बहुत कठिन था. गरीबखाने में उसे विनम्र और आज्ञाकारी होना सिखाया गया था, लेकिन इसके अलावा कुछ नहीं. "बारह गायें," उसने सोच-समझकर कहा. "क्या यह संभव है कि किसान रोज बारह गायों का दूध पीता हो?"

"अरे नहीं," मित्रवत गाय ने उसे सूचित किया. "वह शहर में दूध बेचता है."

पॉल को धब्बेदार मुर्गी के शब्द याद आ गए, और उसने पूछा, "क्या वहाँ के गरीब बच्चों को दूध मिलता है?"

"हे भगवान, पॉल," गाय ने आह भरी, "तुम अभी भी कितने मूर्ख और अनुभवहीन हो! दूध से वे स्वादिष्ट मलाईदार क्रीम बनाते हैं, जो फिर केक और पुडिंग में जाती है, और इन्हें अमीर लोग खरीदते हैं."

"गरीब क्यों नहीं - क्या उन्हें अच्छे केक खाना पसंद नहीं है?"

"तुम्हें मुझसे इतने सवाल नहीं पूछने चाहिए, छोटे लड़के," गाय ने जवाब दिया. "मैं केवल एक गूंगी गाय हूँ, और नहीं जानती कि तुम्हें क्या जवाब दूँ. इसके अलावा, बेहतर होगा कि तुम चले जाओ. यह वह समय है जब किसान खलिहान में आता है, और अगर वह तुम्हें देख लेगा तो फिर तुम्हारी अच्छी पिटाई होगी."

पॉल ने मित्रवत गाय की चमकती खाल को सहलाया, और अपना रास्ता जारी रखा. वह आगे बढ़ता रहा, जब तक कि वह एक बड़े गेहूँ के खेत में नहीं पहुँच गया, जिसके बीच से हवा बह रही थी. यह धीरे-धीरे चलती सुनहरी लहरों की तरह लग रहा था. बालियों ने नरम आवाज़ में गाना शुरू कर दिया, जो बहुत उदास था, और पॉल ने शब्दों को पहचाना: "जल्द ही काटने वाले यहाँ अपनी दरांती लेकर आएँगे, ज़-ज़-ज़, और हमें काट डालेंगे ज़-ज़-ज़. फिर लोग हम से बढ़िया सफ़ेद रोटी पकाएँगे, ज़-ज़-ज़."

"सफ़ेद रोटी कौन खाता है?" पॉल ने पूछा, जिसने अपने जीवन में कभी सफ़ेद रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं चखा था.

"अमीर लोग, अमीर लोग," गेहूँ की बालियाँ हवा की लय के साथ झूमते हुए गा रही थीं.

"आह, फिर से अमीर लोग!" पॉल ने कहा. "क्या इस दुनिया में सब कुछ अमीर लोगों का ही है?"

"सब कुछ, सब कुछ," बालियों ने गाया.

"क्यों?"

यह सवाल बालियों को बहुत मज़ेदार लगा और हँसी से लगभग दोगुना होकर वे गाने लगीं, "कितने मूर्ख, कितने बेवकूफ़ हो तुम!"

हालाँकि, वे पॉल के सवाल का जवाब देने में विफल रहे. पॉल रोने के करीब था; उसने गुस्से में अपने पैर से ज़मीन पर ठोकर मारी, और ज़ोर से चिल्लाया, "मैं अपने सवालों का जवाब चाहता हूँ. क्या मुझे जवाब देने वाला कोई नहीं है?"

तभी एक साही धीरे-धीरे सड़क पार करके आया और बोला, "सबसे बुद्धिमान प्राणी जिसे मैं जानता हूँ, वह उल्लू है जो महान ओक के जंगल में रहता है. तुम उसके पास क्यों नहीं जाते, तुम प्रश्न वाले लड़के."

"क्या तुम मुझे नहीं बता सकते कि क्यों...?" साही ने पॉल को बात पूरी करने की अनुमति नहीं दी; अधीरता से उसने अपना सिर अंदर खींचा, अपने काँटों को बाहर निकाला, जब तक कि वह काँटों से ढकी गेंद की तरह न दिखने लगा.

"मैं लोगों के साथ नहीं जुड़ता," साही ने कहा, और उसकी आवाज़ उसके काँटों की तरह तीखी हो गई. "लोग मेरे लिए बहुत मूर्ख हैं. उल्लू के पास जाओ, लेकिन उसे परेशान मत करो, नहीं तो वह तुम्हारी आँखें फोड़ देगी."

रात हो गई, अपनी काली परछाईयाँ बिखेरते हुए, और सारी ज़मीन को ढक लिया. जंगल में अँधेरा था और पॉल कुछ बेचैन हो रहा था, फिर भी यह रहस्यमय जंगल उसे भयानक गरीबखाने से ज़्यादा सुखद लगा, और वह आगे बढ़ता गया.

वह जितना आगे बढ़ता गया, पेड़ उतने ही घने और करीब होते गए. जल्द ही वहाँ कोई रास्ता नहीं रह गया; लेकिन पॉल हरी काई के नरम कालीन पर आगे बढ़ता गया. जंगल की खुशबू सुखद थी. ऊँचे पेड़ों के नीचे स्वादिष्ट स्ट्रॉबेरी उग रही थीं और छोटा लड़का उन्हें तोड़कर ले जा रहा था और साथ-साथ चलते हुए खुद को तरोताज़ा कर रहा था.

अंत में वह एक बड़े ओक के पेड़ के पास पहुँचा, और उसने देखा कि उल्लू एक शाखा पर बैठी थी. उल्लू ने एक बड़ा चश्मा पहना हुआ था और अपने पंजों में पकड़ी हुई एक हरे कागज को ध्यान से देख रही थी. पॉल पेड़ के नीचे रुका और चिल्लाया, "श्रीमती उल्लू! श्रीमती उल्लू!!"

लेकिन उल्लू अपनी पढ़ाई में इतना डूबी हुई थी कि उसने कुछ नहीं सुना और जब उसने कई बार पुकारा, तभी उसने नीचे देखा. गुस्से से चिल्लाते हुए उसने पॉल को भयंकर गोल आँखों से घूरा.

"अच्छा, तुम क्या चाहते हो?" उसने पूछा. "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरी पढ़ाई में बाधा डालने की?"

"माफ करना, श्रीमती उल्लू!" पॉल ने विनती की. "साही ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है. उसने मुझसे कहा कि तुम सबसे बुद्धिमान प्राणी हो जिसे वह जानता है. निश्चित रूप से, तुम मेरे सवालों का जवाब दे पाओगी."

"साही की राय से मुझे क्या मतलब? तुम्हारे सवालों से मेरा क्या लेना-देना?" उल्लू ने गुर्राते हुए कहा. "मैं तुम जैसे मूर्ख बच्चे पर अपना कीमती समय क्यों बर्बाद करूँ? तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं केवल रात में ही देख सकती हूँ और गर्मियों की रातें इतनी छोटी होती हैं कि मेरे पास अपनी पढ़ाई के लिए मुश्किल से ही समय होता है. मैं भी हर तरह के सवालों पर सोचती रहती हूँ. एक सवाल तो मुझे अनगिनत सालों से परेशान कर रहा है; मैं बूढ़ी हो गई हूँ और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, फिर भी दुनिया का कोई भी विज्ञान मुझे उसे हल करने में मदद नहीं कर पाया है." उल्लू ने गहरी साँस ली और उसका चेहरा उदास हो गया.

"और तुम्हारा यह सवाल क्या है?" पॉल ने उत्सुकता से पूछा.

"क्या तुम्हें लगता है कि तुम इसका जवाब दे सकते हो, तुम युवा बेवकूफ?" उल्लू ने व्यंग्य किया. इस सवाल के इर्द-गिर्द दुनिया के बाकी सारे सवाल लटके हुए हैं; वह है: सभी लोग इतने मूर्ख क्यों होते हैं?"

"क्या सभी लोग वाकई इतने मूर्ख होते हैं?" पॉल ने आश्चर्यचकित होकर पूछा.

"हाँ, और अगर तुम यह नहीं जानते, तो तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? क्या इसलिए कि तुमने कभी कुछ नहीं देखा इसलिए तुम इतने मूर्ख हो?"

"बहुत कम," छोटे लड़के ने शर्मिंदगी से जवाब दिया. "प्रिय श्रीमती उल्लू, तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं एक गरीबखाने में रहता हूँ, जहाँ केवल बूढ़े लोग हैं, और स्वाभाविक रूप से वे सभी बुद्धिमान हैं."

"हा, हा, हा!" श्रीमाती उल्लू हँसी. अंधेरे जंगल में यह बहुत भयानक लग रहा था. "हा, हा, हा मैं तुम निश्चित रूप से मानव जाति की मूर्खता का एक और शानदार उदाहरण हो. तो क्या यह सच है कि गरीबों के घर में सभी लोग बुद्धिमान हैं? खैर, हम देखेंगे कि क्या तुम सही हो. गरीबों के घर में तुम्हें सबसे अच्छा कौन लगता है?"

"मैरी."

"मैरी, कौन है?"

"नौकरानी."

"वह क्या करती है?"

"वह पूरे दिन काम करती है.
वह सुबह पाँच बजे उठती है, और सबसे आखिर में सोती है."

"तो वह शायद बहुत सारा पैसा कमाती होगी,
सुंदर कपड़े पहनती होगी, और अच्छा खाना खाती होगी?"

"अरे नहीं, वह एक भिखारी की तरह गरीब है, वह अपने कपड़ों पर बार-बार पैबंद लगाती है, और जो दूसरे लोग छोड़ देते हैं, उस झूठन को खाती है."

"हम्म-म्म. अच्छा, फिर वह इतनी मेहनत क्यों करती है, अगर उसे इससे कुछ नहीं मिलता है?"

छोटे पॉल ने कुछ देर सोचा, आखिरकार उसने कहा, "मुझे नहीं पता."

"लेकिन मैं जानता हूँ - ऐसा इसलिए है क्योंकि वह मूर्ख है. मैरी जानती है कि कुछ ऐसी फैशनेबल महिलाएँ भी हैं जो अपना हाथ तक नहीं हिलातीं, जो शानदार कपड़े पहनती हैं, महँगे खाने खाती हैं, ऐशो-आराम से रहती हैं. क्या मैरी ने कभी खुद से नहीं पूछा: ऐसा कैसे है कि मैं, जो दिन भर काम करती हूँ, के पास कुछ भी नहीं है, और वे, जो कुछ नहीं करतीं, उनके पास सब कुछ है?"

"मुझे नहीं लगता."

"तो फिर, तुम्हारी मैरी मूर्ख है, बहुत मूर्ख. तुम अब और किसे बुद्धिमान समझते हो, छोटे लड़के?"

"बूढ़े जैकब को."

"यह बूढ़ा जैकब कौन है?"

"वह एक बूढ़ा मज़दूर है; वह अस्सी साल का है. उसने अपने सत्तरवें साल तक काम किया. अब वह कुछ और नहीं कर सकता, और उसके हाथ-पैर और टाँगें गठिया की वजह से अपंग हो गई हैं."

"उसने दूसरों के लिए साठ साल काम किया! बहुत लंबा समय! मुझे लगता है कि बूढ़े जैकब के साथ एक राजकुमार की तरह व्यवहार किया जाता होगा, हर कोई उसकी सेवा करने के लिए बहुत उत्सुक रहता होगा? उसके थके हुए अंगों के लिए उसके पास एक बढ़िया मुलायम बिस्तर होगा, उसे हर दिन खास तरह का खाना मिलता होगा, वह अच्छी तरह और खुशी से रहता होगा?"

"अरे नहीं, जब भी वह शिकायत करता है कि रोटी उसके बूढ़े दांतों के लिए बहुत सख्त है, तो बूढ़ी महिला हमेशा उसे कोसती है. और अगर वह थोड़ी सी तंबाकू मांगता है, तो भी वह गुस्सा हो जाती है और चिल्लाती है कि वह नासमझ है."

"तो फिर बूढ़ा जैकब सत्तर साल की उम्र तक काम क्यों करता रहा, अगर अब जब वह बूढ़ा हो गया है, तो वह ठीक से जी भी नहीं पाता है?"

"मुझे नहीं पता."

"क्योंकि वह मूर्ख है. वह भी जानता है, मैरी की तरह, कि ऐसे कई अमीर युवा भी हैं जो कुछ भी नहीं करते और फिर भी राजाओं की तरह रहते हैं. क्या अब तुम समझ गए हो, छोटे शैतान, कि लोग मूर्ख होते हैं?"

"हाँ," पॉल ने उदास होकर कहा. "लेकिन मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ, प्रिय श्रीमती उल्लू. दुनिया में अमीर लोग क्यों हैं?"

"वास्तव में हमारी बातचीत के बाद तुम्हें खुद ही इस सवाल का जवाब देने में सक्षम होना चाहिए, छोटे मूर्ख: क्योंकि गरीब लोग मूर्ख होते हैं."

"लेकिन वे मूर्ख क्यों होते हैं?"

लेकिन अब उल्लू क्रोधित हो गया, मोटी मेट्रन और चमकीले धब्बेदार मुर्गी की तरह.

"क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया, छोटे शैतान, मूर्ख छोटे व्यक्ति, कि मैं इस प्रश्न के बारे में वर्षों से सोच रही हूँ? अस्सी साल बाद फिर आना, तब शायद मैं तुम्हें उसका उत्तर दे पाऊँ."

"लेकिन क्यों...?"

"चुप रहो!" उल्लू ने छोटे पॉल को आदेश दिया. "तुमने पहले ही मेरा बहुत कीमती समय चुराया है. तुम अब कोयल के पास जाओ!"

"वह कहाँ रहती है?" भयभीत छोटे लड़के ने पूछा.

लेकिन उल्लू ने पहले ही अपना चश्मा ठीक कर लिया था, हरी पत्तियों में खो गई थी, और उसने कोई जवाब नहीं दिया.

"ओह, बेचारा मैं!" छोटे पॉल ने दुखी होकर सोचा. "अब मुझे कोयल के पास जाना होगा, और मुझे यह भी नहीं पता कि वह कहाँ रहती है. क्या कोयल उल्लू से ज़्यादा जानती होगी? और मैं पहले से ही इतना थक गया हूँ, मेरे पैर दुख रहे हैं."

वह एक पतली टहनी के पैर के पास नरम हरी काई पर बैठ गया. धीरे-धीरे वह बहुत उदास हो गया. वह सोच रहा था कि वह कैसे पूरी तरह से अकेला और परित्यक्त हो गया है, कोई भी उसके लिए अच्छा नहीं है, और अचानक वह फूट-फूट कर रोने लगा. इसके बाद उसे कहीं ऊपर से आती एक पतली सी आवाज़ का अहसास हुआ; यह शुद्ध चांदी की छोटी घंटियों की तरह लग रही थी.

"तुम क्यों रो रहे हो, छोटे बच्चे?" चांदी जैसी आवाज़ ने पूछा.

पॉल ने ऊपर देखा और उसने अपने जीवन में अब तक का सबसे अद्भुत छोटा जीव देखा. भोजपत्र की एक शाखा पर एक परी बैठी थी. उसके लंबे सुनहरे-सुनहरे बाल थे, जो उसके पैरों तक पहुँच रहे थे, उसका छोटा सा चेहरा चांदनी की तरह पीला और नाजुक था, और उसकी बड़ी आँखें भोजपत्र की पत्तियों की तरह हरी चमक रही थीं. वह बहुत हल्के से पॉल की ओर उड़ी, उसके कंधे पर बैठी, ऐसा लगा जैसे एक हल्का पत्ता उसे छू गया हो, और अपने छोटे सफेद हाथों से उसके चेहरे को सहलाया. पॉल का दिल गर्म हो गया. कोमल हाथों से छुआ जाना कितना अच्छा था! उसके आँसू रुक गए, उसने छोटे जीव को देखा, और आखिरकार पूछा, "तुम कौन हो?

"मैं एक ड्रायड हूँ, मैं भोजपत्र के पेड़ की आत्मा हूँ," छोटे जीव ने घोषणा की. "पूरे दिन मुझे अपने पेड़ पर बैठना पड़ता है, लेकिन जब रात होती है, तो मैं आज़ाद हो जाती हूँ, मैं धरती पर घूमती हूँ, अपनी अन्य ड्रायड, बहनों के साथ खेलती हूँ. लेकिन मुझे बताओ, तुम किस कारण से उदास हो?"

पॉल ने ड्रायड को अपनी नाखुशी के बारे में बताया, अंत में कहा, "मैं हमेशा 'क्यों' सवाल पूछता हूँ। यह सवाल मेरे दिल में जलता है, मुझे दुख पहुँचाता है, और मुझे विश्वास है कि अगर मुझे कभी इसका जवाब मिल जाए, तो मैं खुश हो जाऊँगा. लेकिन अब यह सवाल मेरे और उन सभी लोगों के बीच खड़ा है जो सवाल नहीं पूछते हैं और यह मुझे बहुत अकेला बनाता है."

छोटी ड्रायड हँसी और उसका सुंदर चेहरा पहले से ज़्यादा मीठा और कोमल हो गया. "तुम गलत हो, छोटे पॉल," उसने धीरे से कहा. "तुम अकेले नहीं हो. सैकड़ों और हज़ारों लोग यही सवाल पूछते हैं, दुखी और परेशान. अपना कान ज़मीन पर लगाओ और मुझे बताओ कि तुम क्या सुन रहे हो."

पॉल ने आज्ञा मानी. पहले तो उसने केवल एक अस्पष्ट आह और फुसफुसाहट सुनी, फिर उसे लगा कि उसने एक भयानक रोना और चीखना सुना है, और अंत में उसने कुछ शब्द सुने.

"माँ, मुझे भूख लगी है, क्या खाने के लिए कुछ क्यों नहीं है?"

"मैं इस गर्म शहर में घुट रहा हूँ, मैं अपने अमीर स्कूली साथियों की तरह देहात की सैर करने क्यों नहीं जा सकता?"

"मैं सारा दिन काम करता हूँ, फिर भी मेरी मज़दूरी इतनी कम क्यों है कि मेरे पास जीने के लिए भी पैसे नहीं हैं?"

एक महिला की आवाज़ में सिसकियाँ उठीं.

"बेकार लोगों के पास सब कुछ क्यों है और मज़दूरों के पास कुछ भी क्यों नहीं है?"

और फिर सभी आवाज़ें एक साथ गूंज उठीं, रोते हुए, बड़बड़ाते हुए, सिसकते हुए, धमकी देते हुए, "क्यों? क्यों?"

पॉल उठ बैठा, उसने छोटे ड्रायड को देखा जो उसके पास बहुत चुपचाप बैठा था और पूछा, "ये लोग कौन हैं जिन्हें मैंने सुना है?"

"वे तुम्हारे अपने ही लोग हैं," छोटे ड्रायड ने उत्तर दिया. “वे तुम्हारा परिवार हैं. तुमने दुनिया की सभी भाषाएँ सुनी हैं, तुम हर मुँह से सवाल सुनोगे, गुस्से से, बेचैनी से, धमकी से. हर दिन नई आवाज़ें इस कोरस में शामिल होती जाती हैं, और जब वे हज़ारों आवाज़ें, लाखों और अरबों में बदल जाएँगी, तब दुख और गरीबी का और उन आलसी परजीवियों का अंत हो जाएगा."

"वो कब होगा?" पॉल ने उत्सुकता से पूछा.

"यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता, मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ — हर बार जब मैं धरती पर कान लगाता हूँ, तो मुझे नई आवाज़ें जुड़ती हुई मिलती हैं और इसी तरह मैं जानता हूँ कि वह दिन दूर नहीं है."

"और क्या उस दिन को जल्दी लाने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता?"

"बेशक. ऐसे बहुत से लोग हैं जो अभी तक नहीं जानते कि कुछ लोगों का जीवन कितना अच्छा है और उनका जीवन कितना बुरा है; जो जानवरों की तरह काम करते हैं और कभी नहीं पूछते कि उनके ईमानदार श्रम के बाद उन्हें इतनी कम मज़दूरी क्यों मिलती है. इन बेचारे अंधे लोगों को सच्चाई दिखानी होगी, और यह बिल्कुल भी आसान नहीं है, क्योंकि गरीब दिन भर के काम से इतने थक जाते हैं कि वे मुश्किल से सोच पाते हैं; और अमीर लोग मज़दूरों के मन में सवाल न जगे इसके लिए हर संभव कोशिश करते हैं. इसलिए वे हर उस व्यक्ति को सज़ा देते हैं जो पूछता है, 'क्यों?' तुम अपने अनुभव से पहले ही सीख चुके हो, छोटे पॉल."

"तो मुझे सवाल पूछना जारी रखना चाहिए?"

"हाँ, छोटे पॉल, लेकिन अमीरों से मत पूछो, वे तुम्हें जवाब नहीं देंगे क्योंकि अगर वे जवाब देते तो उन्हें कहना पड़ता, "दुनिया गरीब लोगों के लिए बहुत बुरी जगह है क्योंकि हम, अमीर, लालची, स्वार्थी, नीच हैं, और कोई भी व्यक्ति अपने बारे में ऐसा कहना पसंद नहीं करता. लेकिन गरीब लोगों के पास जाओ, उनसे पूछो, 'तुम कड़ी मेहनत करते हो, फिर भी सूखी रोटी क्यों खाते हो, जबकि निकम्मे अमीर केक खाते हैं? तुम्हारे बच्चे पीले, पतले और बीमार क्यों हैं जबकि अमीर बच्चे गुलाबी, मोटे और स्वस्थ हैं? तुम्हारी मेहनत की लंबी ज़िंदगी गरीबों के घर में क्यों जल्दी खत्म होती है, जबकि आलसी भ्रष्टाचारियों की बुढ़ापे में अच्छी तरह से देखभाल की जाती है, वे अपने आलस्य के जीवन में भी आराम करते हैं?" गरीब लोगों से ये सवाल बार-बार लंबे समय तक और इतनी बार पूछो कि वे अन्याय की संरचना पर हथौड़े की तरह गिरें और उसे चकनाचूर कर दें. क्या तुम ऐसा करोगे, छोटे पॉल?"

"हाँ," लड़के ने आँखों में चमक के साथ उत्तर दिया.

नन्ही ड्रायड ने उसके माथे को चूमा और गंभीरता से कहा, "तुम्हारा जीवन कठिन होगा, नन्हे पॉल. अमीर लोग, जो लूटे गए सामान को खोने से डरते हैं, तुम्हें सज़ा देंगे. वे तुम्हारे गले में अटके सवाल को दबाने की कोशिश करेंगे, वे तुम्हें जेल में डाल देंगे, ताकि कोई तुम्हारी आवाज़ न सुन सके. लेकिन तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, क्योंकि यह सवाल तुम्हारे मन में व्यर्थ नहीं पैदा हुआ, तुम्हें उन हज़ारों लोगों के सामने बोलना है जो आज भी गूंगे हैं. और तुम्हें साथी, दोस्त मिलेंगे - तुम बिल्कुल अकेले नहीं रहोगे."

नन्हे ड्रायड ने हँसते हुए पॉल को सिर हिलाया, हल्के से ऊपर की ओर झुका, और भोजपत्र की एक शाखा पर बैठ गया.

"क्या तुम जल्दी जा रहे हो," नन्हे पॉल ने चिंतित होकर पूछा.

"तुम्हें घर जाना चाहिए, नन्हे पॉल. लेकिन तुम्हें हमेशा वापस आना चाहिए और मैं तुम्हें सांत्वना दूँगा और तुम्हारी मदद करूँगा."

"थोड़ा रुको," पॉल ने विनती की. "उल्लू ने कहा कि अस्सी साल में, अब से अस्सी साल बाद ही वह मेरे सवाल का जवाब दे पाएगी. यह बहुत लंबा समय है. क्या उल्लू ने सच कहा?"

"यह सब लोगों पर निर्भर करता है," छोटे ड्रायड की हल्की, चांदी जैसी आवाज़ ने उत्तर दिया. "शायद आपको समझदार बनने में अस्सी साल लगेंगे, शायद अगर आप और आपके साथी, सवाल पूछना बंद न करें, तो इसमें केवल पचास साल लग सकते हैं. तब स्वतंत्रता का महान दिन बीस, दस साल में भी आ सकता है. हाँ, शायद कल भी."

छोटा ड्रायड पेड़ में गायब हो गया, लेकिन पूरा पेड़ हल्के, हर्षित स्वरों में छोटे पॉल को पुकार रहा था:

"कल! कल! कल!"